॥ओ३म्॥

उप सर्प मातरं भूमिम्॥ (ऋ. 10/18/10) मातृभूमि की सेवा करो।

आर्य समाज के संस्थापक
महर्षि दयानन्द सरस्वती

युवा निर्माण

आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश (पंजी.) का मासिक मुखपत्र
(सार्वदेशिक आर्य वीर दल की एक इकाई)

युवकों का होता जहाँ चरित्र निर्माण, आर्य वीर दल है उसका नाम

वर्ष- 1, अंक- 7
माह- अगस्त 2017
पृष्ठ-20

सृष्टि संवत्- 1,96,08,53,118
विक्रमी संवत्- 2074
दयानन्दाब्द- 194

प्रति शुल्क- 15/-
वार्षिक शुल्क-150/-

माननीय श्री रामनाथ कोविंद जी को भारत के 14वें राष्ट्रपति बनने पर आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश की ओर से हार्दिक शुभकामनायें एवं बधाई-

जगवीर आर्य (संचालक व सम्पादक)

किसी भी देश का राष्ट्रपति अपने देश का प्रथम नागरिक व सेना का प्रमुख सेनापति होता है और प्रथम नागरिक होने के कारण उसका राष्ट्र के प्रति प्रेम, समर्पण, सादगी, उत्कृष्ट व्यक्तित्त्व, संघर्षशीलता, कर्मठता, मानवीय मूल्यों पर आस्था तथा राष्ट्र के कानून व संविधान के प्रति श्रद्धा का होना व स्वीकारियता अति आवश्यक है। यह हमारे देश का सौभाग्य रहा है कि आजादी के बाद जितने भी राष्ट्रपति बने, उन सभी में यह गुण प्राय: दृष्टिगत होते हैं। सर्वप्रथम सर्वश्री माननीय डॉ. राजेन्द्र प्रसाद (26 जनवरी 1950-12 मई 1962), सर्वपल्ली राधाकृष्णन (13 मई 1962-1967), जाकिरहुसैन (1967-69), वैराहागिरी वैंकटगिरी (3 मई 1969-20 जुलाई 1969), मोहम्मद हिदायतुल्ला

शेष पृष्ठ 11 पर

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के अनन्य भक्त व प्रखर वैदिक प्रवक्ता डॉ. सत्यपाल सिंह जी, सांसद बागपत (पूर्व कमिश्नर, मुंबई पुलिस) को भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा भारत सरकार में मानव संसाधन एवं विकास राज्यमन्त्री बनाने पर आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश, आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश एवं समस्त आर्य जनता की ओर से बहुत-बहुत बधाई व शुभकामनायें।

स्वतन्त्रता संग्राम के प्रथम सूत्रधार महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

आचार्य भद्रकाम वर्णी (वैदिक प्रवक्ता)

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती स्वामी विरजानन्द सरस्वती जी के शिष्य थे। स्वामी विरजानन्द जी के गुरु स्वामी पूर्णानन्द जी और स्वामी पूर्णानन्द जी के गुरु स्वामी ओमानन्द जी थे। इन चारों महान् योनियों ने अपने विचारों तथा शिक्षा का प्रचार कर दो हजार साधुओं और संतों को संगठित किया। इन्हीं साधु-संतों ने सम्पूर्ण भारत में स्वतन्त्रता की चेतना जनमानस में जागृत की। इस संगठन में अनेक समुदायों के लोग सम्मिलित थे। मेले, उत्सवों, तीर्थ स्थानों, सैनिक छावनियों में जाकर आजादी के सन्देश को जनसाधारण में पहुँचाया। ये सभी लोग गुप्त रूप से लोगों के मन में आजादी के लिये संघर्ष करने की इच्छाशक्ति पैदा करते थे।

शेष पृष्ठ 3 पर

प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के बलिदानी

स्वामी देवव्रत सरस्वती (प्रधान सेनापति, सा.आ.वी.दल)

स्वाधीनता मानव का सर्वोच्च गुण है। मानव के अतिरिक्त दूसरे प्राणी भी बन्धन की अपेक्षा स्वच्छंद विचरण करना पसंद करते हैं किन्तु स्वार्थ और विस्तारवाद ने स्वाधीनता और उसका सम्मान करने वालों पर सदैव आक्रमण किया है, अपमानित किया है। योगियों ने जिसे मुक्ति और मनुष्यों ने सुख कहा है, उच्चता में जो अत्युच्च और सर्वोत्तम हो उसका नाम है स्वतन्त्रता। मनु महाराज कहते हैं-जो काम अपने अधीन हो, वही सुखकारक है। **"पराधीन सपनेहु सुख नाही।"** परतन्त्रता सबसे बड़ा दु:ख है। महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश के अष्टम समुल्लास में लिखते हैं-**"कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है**

शेष पृष्ठ 5 पर

स्वर्णिम भारत और भ्रष्ट बाबाओं के पनपते साम्राज्य के कौन-कौन से कारण?

बृहस्पति आर्य (महामन्त्री व सहसम्पादक)

वैदिक मान्यता के अनुसार परमात्मा से मनुष्य का सीधा सम्बन्ध है। मनुष्य और परमात्मा के बीच में कोई नहीं आ सकता। अवतारवाद, गुरुडम, बाबाओं, पैगम्बरवाद ने मानव जाति को खण्ड-खण्ड करके विभिन्न मत-मतान्तरों, पाखण्ड व साम्प्रदायवाद की नींव डाली है। इस लेख को लिखने का उद्देश्य सत्य-असत्य व वास्तविकता का बोध कराना है।

यह भारत देश ब्रह्मा से लेकर जैमिनी पर्यन्त व महर्षि दयानन्द जैसे ऋषि-महर्षियों, संन्यासियों, संतों, विद्वानों व वैज्ञानिकों की भूमि रही है। इसका गौरवशाली इतिहास वैभव से परिपूर्ण रहा है। यह धरा वेद ज्ञान-गंगा, धन-धान्य, औषधियों, मनुष्य मात्र का समग्र उपकार करने वाले पशु

शेष पृष्ठ 7 पर

कारगिल की शौर्य गाथा (विजय दिवस-26 जुलाई)

वाचस्पति शास्त्री (कार्यालय मन्त्री)

आज से 18 वर्ष पहले 26 जुलाई 1999 को भारतीय सेना ने अपने पराक्रम, वीरता और शौर्य से कारगिल की पहाड़ियों पर अनैतिक रूप से कब्जा जमाए पाकिस्तानी आतंकियों और उनके वेश में घुस आए पाकिस्तानी सैनिकों को मार भगाया था। उसी की याद में तभी से प्रतिवर्ष 26 जुलाई को "कारगिल विजय दिवस" के रूप में मनाया जाता है। 6 मई 1999 से 26 जुलाई 1999 तक कारगिल युद्ध लड़ा गया। इस युद्ध में भारतीय सैनिकों ने अजेय सैन्य कौशल, धैर्य, साहस, पराक्रम व वीरता का अद्भुत परिचय देते हुए सभी भारतीयों और तिरंगे का मान बढ़ाते हुए विजय प्राप्त की। इस युद्ध का मुख्य कारण बड़ी संख्या में पाकिस्तानी सैनिकों और पाकिस्तानी घुसपैठियों (जेहादियों) का भारत-पाक की नियन्त्रण रेखा के भीतर घुस आना था, जिससे लेह-लद्दाख और सियाचिन ग्लेशियर पर कब्जा कर पाकिस्तान अपने नियन्त्रण रेखा में मिलाने का नापाक इरादा रखते हुए भारत देश की सुरक्षा व अस्मिता को छिन्न-भिन्न कर देना चाहता था।

शेष पृष्ठ 10 पर

श्रावणी पर्व एक चिन्तन-हिन्दुओं में वैदिक प्राचीनता की पहचान

डॉ. गंगाशरण आर्य (साहित्य सुमन)

भारत वर्ष ऋषियों-मुनियों की पावन धरती होने का गौरव रखता है। आदि सभ्यता का उद्‌गम स्थल होने का गौरव भारत को ही है। हमारे ऋषियों ने समय-समय पर मानव को संस्कारित करते रहने के लिए इन्हें अपना कर्त्तव्य बोध करवाने के लिए कुछ सीखते रहने की परम्परा अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए अनेक पर्वों, त्योहारों व उत्सवों की एक लड़ी सी बनाई है। इन पर्वों, उत्सवों को मनाने के नियमावली जो हमारे ऋषियों ने दी है उनके माध्यम से हम जाने में ही नहीं अनजाने व अनचाहे भी बहुत से उपकार, नवनिर्माण व धर्म के अनुष्ठान के कार्य कर जाते हैं, जो हमें अपने आप जीवन की दैनिक व्यस्तताओं की अवस्था में कर पाना संभव नहीं हो पाता। ऐसे ही पर्वों में श्रावणी पर्व तथा रक्षाबन्धन भी एक है। "पर्व" कहते हैं एक पूरक तथा ग्रन्थी को। श्रावणी पर्व जीवन में आनन्द भर देता है तथा ग्रन्थी होने से उसकी रक्षा भी करता है। जिस

शेष पृष्ठ 8 पर

योगीराज श्रीकृष्ण जी का किया जा रहा अपमान

बृहस्पति आर्य (महामन्त्री व सहसम्पादक)

अगस्त का माह भारतीय समाज के लिये विशेष महत्त्व रखता है क्योंकि इस माह में भारत वर्ष को सैकड़ों वर्ष की गुलामी से स्वन्त्रता प्राप्त हुई, साथ ही इस माह में वेद आदि सत्यशास्त्रों के अध्ययनार्थ श्रावणी-उपाकर्म पर्व का भी शुभारम्भ होता है और आज से लगभग 5200 वर्ष पूर्व मथुरा में योगीराज श्रीकृष्ण जी का जन्म हुआ। आपके जन्मदिन को सम्पूर्ण भारतवर्ष व कई देशों में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के रूप में हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। योगीराज श्रीकृष्ण द्वारा विध्वंसकारी आसुरी शक्तियों और अधर्म का विनाश कर सत्य और धर्म की स्थापना की गई। आपके इन कार्यों को स्मरण कर प्रत्येक भारतीय में ऊर्जा व उत्साह

शेष पृष्ठ 11 पर

स्वतन्त्रता संग्राम के प्रथम सूत्रधार---- पृष्ठ 1 का शेष

पहली सभाः- कुम्भ के मेला हरिद्वार में 1855 में हुई थी, जिसमें अन्तिम मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर के बड़े पुत्र फिरोजशाह, बाला साहिब मराठा, मौलाना अजीमुल्ला, श्री कुंवर सिंह, नाना साहब पेशवा, झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई, गंगा बाई, राजा गोविन्दनाथ राय इत्यादि अन्य प्रतिष्ठित लोग उपस्थित थे। सभी ने अपना-अपना अभिमत रखा। जिसका वर्णन महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने कलकत्ता कथ्य "योगी का आत्मचरित्र" में विस्तार से किया है।

स्वतन्त्रता आन्दोलन हेतु दो चिह्नों को चुना गया। पहला चिह्न कमल का पुष्प तथा दूसरा चिह्न चपाती (रोटी)। प्रथम चिह्न कमल के फूल को उन सैनिकों में वितरित किया गया, जो आन्दोलन में साथ देने को तैयार थे। एक छावनी का सैनिक कमल को दूसरे छावनी के सैनिकों के पास पहुँचाता था। इसकी स्वीकृति का अर्थ माना जाता था कि उस छावनी के सैनिक स्वतन्त्रता की लड़ाई में शामिल होने के लिये तैयार हैं। इस योजना के अन्तर्गत हजारों कमल के फूल पेशावर से लेकर बैरकपुर (कलकत्ता) तक सभी छावनियों में पहुँचाये गये।

दूसरा चिह्न चपाती (रोटी) को एक गाँव से दूसरे गाँव तक आम जनता में पहुँचाई जाती थी। इसकी स्वीकृति का अर्थ यह होता था कि सारा गाँव इस आन्दोलन में भाग लेने के लिये तैयार है।

यह प्रक्रिया पूरे देश में तथा सैनिकों में 1855 से 1857 तक निरन्तर चलती रही। इससे लाखों लोग आजादी के लड़ाई में भाग लेने के लिये तैयार हो गये। इसके परिणामस्वरूप मई 1857 में स्वतन्त्रता का संग्राम सफल हुआ। जो कि अंग्रेजों के विरुद्ध प्रथम प्रजा विरोध था। इसको **"1857 का संग्राम"** के नाम से जाना जाता है। जिसके सूत्रधार महर्षि दयानन्द सरस्वती जी थे।

दूसरी सभाः- दूसरी बृहद् सभा का आयोजन गढ़गंगा के कार्तिक मेले के दौरान 5 अक्टूबर 1855 को किया गया। इसकी अध्यक्षता स्वामी पूर्णानन्द जी ने की। सभा में स्वामी ओमानन्द जी ने कहा था कि "अपना सम्मान ऊँचा रखें। परमात्मा पर विश्वास करें, अपनी मातृभूमि का प्रत्येक नागरिक अपना भाई-बहन हैं। स्वतन्त्रता के लिये सभी तैयार रहें।" सैय्यद फखरुद्दीन ने अपने भाषण में कहा था कि "अपने राष्ट्र को विदेशियों के हाथ में न सौंपें। क्योंकि वे राजा नहीं अपितु डाकू व लुटेरे हैं। जिनका उद्देश्य केवल भारत की सम्पदा को लूटना है। वे सारे भारत के जन-जन के शत्रु हैं। हर वर्ग का खून चूसना चाहते हैं। इनसे सावधान रहने की आवश्यकता है। अन्यथा पूरी जाति का विनाश करके मातृभूमि को हड़प लेंगे। इन विदेशियों को इस देश से उखाड़ फेंकना हमारा मुख्य कर्त्तव्य एवं धर्म है।"

तीसरी सभाः- इसका आयोजन 11 अक्टूबर 1855 को हरिद्वार की पहाड़ियों में पुनः स्वामी पूर्णानन्द जी की अध्यक्षता में हुई। जिसमें 565 साधुओं ने भाग लिया था। जिसमें मुस्लिम तथा हिन्दू धर्म को मानने वाले थे। इस सभा में स्वामी विरजानन्द जी, स्वामी दयानन्द सरस्वती जी भी शामिल थे। सर्वखाफ के सरकारी रिकॉर्डर और सन्देशवाहक मीर मुश्ताक भी उपस्थित थे। जाट समुदाय के मोहनलाल जाट, सेना प्रमुख शेषराम जाट, उपप्रमुख भगवत गूजर तथा पण्डित शोभाराम जी भी उपस्थित थे। इस सभा में सैय्यद फखरुद्दीन एवं स्वामी पूर्णानन्द जी ने अपने विचार रखे। स्वामी पूर्णानन्द जी ने न केवल धर्म रक्षा व कर्त्तव्य की बात की अपितु राष्ट्र के उत्थान के विभिन्न माध्यमों का उल्लेख किया।

चौथी सभाः- सन् 1856 में स्वामी विरजानन्द जी की अध्यक्षता में गुप्त स्थान में हुई, जिसमें स्वतन्त्रता आन्दोलन के प्रमुख नेता ही उपस्थित थे। अपने उद्बोधन में स्वामी विरजानन्द जी ने ईश्वर का धन्यवाद किया। तत्पश्चात् राष्ट्रीयता अर्थात् स्वतन्त्रता संग्राम के विषय में अपना विचार रखते हुये कहा कि "स्वाधीनता ही व्यक्ति व राष्ट्र की मौलिक सम्पत्ति है तथा परतन्त्रता शाप एवं लज्जा की बात है। स्वराज्य विदेशी राज से सौ गुणा अच्छा है। पराधीनता स्वाभिमान पर भारी आघात है। हमारे मन में किसी समुदाय तथा देश के लिये घृणा नहीं है। हम ईश्वर से उनके लिये शुभाकामना करते हैं, परन्तु ये क्रूर एवं दुष्ट लोग हमारे देश में राजाओं को अपमानित कर हम पर जबरन राज्य कर रहे हैं। भारतीयों के साथ पशुओं जैसा व्यवहार करना इनकी प्रवृत्ति बन

गई है। ईश्वर की दृष्टि में सभी मनुष्य समान हैं, परन्तु ये विदेशी यहाँ के लोगों को बराबर न समझकर "दास" का व्यवहार करते हैं।

किसी भी धार्मिक ग्रन्थ में मनुष्य का मनुष्य के प्रति बुरा व्यवहार हो, ऐसा नहीं लिखा। परन्तु ये विदेशी, हमारे लोगों को पीड़ित एवं प्रताड़ित करने में सुख की अनुभूति करते हैं। इनमें कुछ अच्छाईयाँ भी हैं परन्तु वक्त आने पर इन अच्छाईयों को किनारे रखकर ये अपनी क्रूरतापूर्ण गतिविधियों को ही अपनाते हैं। विदेशी हमारी मातृभूमि को केवल भोग विलास की भूमि समझते हैं। यहाँ के बच्चों से लेकर बूढ़े तक को अपने घर के पालतू कुत्ते से भी बदतर समझते हैं। ये हमारे संसाधनों को लूटकर अपने देश को मजबूत बनाना चाहते हैं। इस देश से इन्हें कोई प्रेम नहीं, अपितु हर तरफ से इसे खोखला करने में जुटे हुये हैं। इसलिये मेरा आग्रह है कि प्रत्येक भारतीय राष्ट्रभक्त बनकर इसकी रक्षा करें। सभी एक-दूसरे से भाई-भाई जैसा व्यवहार करें। सभी लोग जो इस देश में रहते हैं, आपस में भाई-बन्धु हैं।"

उपरोक्त उदघोष ने लोगों के मन में ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति प्रतिशोध की अग्नि को प्रज्ज्वलित कर दिया और विदेशी शासन के विरोध में संघर्ष करने की इच्छा जागृत की। स्वामी विरजानन्द जी ने नारा दिया:- **"राज बदलो क्रान्ति" अर्थात् स्वतन्त्रता संग्राम।**

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी पूर्णरूपेण स्वतन्त्रता आन्दोलन से जुड़े हुये थे। वे आन्दोलन से जुड़े हुये प्रत्येक गतिविधि की जानकारी रखते थे। स्वाधीनता की उद्घोषणा करते हुये सत्यार्थप्रकाश के आठवें समुल्लास में महर्षि दयानन्द जी ने कहा है कि **"कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है, वह सर्वोपरि होता है।"**

सन् 1857 में अंग्रजों ने तोपों से रणछोड़ जी के मन्दिरों व मूर्तियों को उड़ा दिया था, उस प्रसंग में विदेशी राजा अंग्रेजों की भर्त्सना करते हुये सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में महर्षि दयानन्द जी ने कहा है कि:- **"जो श्रीकृष्ण के सादृश्य कोई होता तो इनके धुर्रे उड़ा देता और ये भागते फिरते।"** इस प्रकार से उपरोक्त चारों संन्यासियों (1. स्वामी ओमानन्द जी, 2. स्वामी पूर्णानन्द जी, 3. स्वामी विरजानन्द जी, तथा 4. स्वामी दयानन्द जी) की अध्यक्षता में अंग्रेजों के विरुद्ध 1857 का संग्राम सफल सिद्ध हुआ। तत्पश्चात् सन् 1857 से लेकर 15 अगस्त 1947 तक लगभग 90 वर्षों तक अंग्रेजों के विरुद्ध आजादी की लड़ाई चली। स्वामी दयानन्द जी के पश्चात् अमर हुतात्मा स्वतन्त्रता सेनानी स्वामी श्रद्धानन्द जी ने इस आन्दोलन को आगे चलाया। तत्पश्चात् स्वामी दयानन्द जी के अन्य शिष्य-प्रशिष्यों में से प्रमुख श्यामजी कृष्ण वर्मा, वीर सावरकर, रामप्रसाद बिस्मिल, सुभाषचन्द्र बोस, चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव, खुदीराम बोस, लाला लाजपत राय, महात्मा हंसराज, बाल गंगाधर तिलक, उधम सिंह, राममनोहर लोहिया, सरदार वल्लभभाई पटेल, डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, लाल बहादुर शास्त्री आदि के नेतृत्व में आन्दोलन अपने निर्णायक स्थिति में पहुँचा, जिसके परिणामस्वरूप 15 अगस्त 1947 को भारत आंशिक रूप से आजाद घोषित हुआ। आंशिक रूप से इसलिये कि आन्दोलन के मध्य में संघर्षकर्त्ताओं के दो विभाजन हो गये। (एक गरम दल तथा दूसरा नरम दल)। गरम दल का नेतृत्व उपरोक्त क्रान्तिकारियों ने किया। नरम दल का नेतृत्व महात्मा गाँधी आदि ने किया।

परस्पर के इस विभाजन के कारण आन्दोलन कुछ कमजोर पड़ा और पूर्ण रूप से आजादी नहीं मिली। नरम दल के नेताओं ने गुपचुप अंग्रेजों के साथ समझौता (संधि) किया। इस समझौते के अनुसार अंग्रेजों ने 150 शर्तें रखीं, जो कि भारत के हित में न तब थे और न अब हैं। विभाजन के कारण से यदि आन्दोलन कमजोर नहीं पड़ता तो हमें 1942 में ही द्वितीय विश्वयुद्ध के समय स्वतन्त्रता मिल गई होती और यह समझौता भी नहीं करना पड़ता। युद्ध में समझौता अर्थात् संधि विजय का प्रतीक नहीं माना जाता अपितु कमजोरी मानी जाती है। युद्ध नीति के विशारद् लोग इस बात को अच्छी प्रकार से जानते व समझते हैं। इतिहासकार लिखते हैं कि आजादी की इस लड़ाई में आर्यों की भागीदारी 85% थी।

26 जनवरी 1950 में अपना संविधान लागू करके भारत को गणतन्त्र घोषित किया गया। इस प्रकार से अब अपना देश भारत स्वतन्त्र तथा गणतन्त्र है। हम उन सभी क्रान्तिकारियों के प्रति कृतज्ञतापूर्वक श्रद्धाञ्जलि समर्पित करते हैं।

शाखानायक एवं शिक्षक संगोष्ठी सम्पन्न

आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश के प्रधान शिक्षक श्री दिनेश आर्य एवं उपप्रधान शिक्षक श्री धर्मवीर आर्य जी के नेतृत्त्व में आर्य वीर दल के आगामी कार्यों को गति देने, शाखाओं का विस्तार करने, शाखाओं के क्षेत्रीय कार्यक्रमों को नया रूप देने हेतु दिनांक रविवार 6 अगस्त 2017 को प्रातः 10 से सायं 4 बजे तक आर्य वीर दल के मुख्य कार्यालय मिण्टो रोड पर शाखानायक एवं शिक्षक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में मुख्य रूप से अगस्त माह से दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों में 5 दिवसीय क्षेत्रीय शिविरों के माध्यम से नई शाखाओं का विस्तार पर चर्चा की गई। साथ ही अगस्त माह से "शाखा दैनन्दिनी पत्रक" को प्रारम्भ किया गया, इस पत्रक में माह में प्रतिदिन शाखा में किये जाने वाले पाठ्यक्रम एवं दल द्वारा दिशानिर्देशों को समाहित किया गया। यह पत्रक प्रत्येक माह प्रत्येक शाखा में दिया जायेगा। इस पत्रक के अनुसार सभी शाखाओं का संचालन किया जायेगा। इस गोष्ठी में सभी को एक **सर्वांगीण विकास हेतु क्षेत्रीय प्रशिक्षण प्रवेश पत्र** भी दिया गया। यह फार्म प्रत्येक शाखा अपनी शाखा में आने वाले आर्यवीरों से भरवा कर दल कार्यालय को प्रेषित करेगी। जिसे दल क्षेत्र अनुसार अपने पास रिकॉर्ड रूप में सुरक्षित रखेगा। इस फार्म में शाखा में सिखाये जाने वाले विभिन्न क्रिया-कलापों का भी संकेत रूप में विवरण दिया गया है। (प्रोस्पेक्टस रूप में)

श्री धर्मवीर आर्य (उपप्रधान शिक्षक आ.वी.द.दि.प्र.)

प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के बलिदानी ---- **पृष्ठ 2 का शेष**

वह सर्वोपरि उत्तम होता है अर्थात् मत-मतान्तर के आग्रहरहित, अपने और पराये का पक्षपातशून्य, प्रजा पर पिता-माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।" स्वतन्त्रता देवी बलिदान मांगती है।

शोणित के बदले जहाँ अश्रु बहता है।
वह देश कभी आजाद नहीं रहता है।।

एक हजार वर्ष से इस रूठी देवी को मनाने के लिये लाखों वीरों ने अपने उष्ण रक्त की आहुति देकर इसका खप्पर भरा है तब कहीं इन नौजवानों के रक्त पर तैरती हुई लंदन से लालकिले तक यह चल कर आई है।

बैरकपुर की छावनी। एक ब्राह्मण सिपाही पानी का लोटा हाथ में लिये जा रहा था। पण्डित जी जरा अपना लोटा देने की कृपा करें? सिपाही ने मुड़कर देखा एक मेहतर सामने खड़ा है। अरे! तुझ नीच जातीवाले को मैं अपना लोटा देकर अपना धर्म भ्रष्ट कर लूँ। छी: छी:! कलयुग आ गया। सिपाही के चेहरे पर घृणा के भाव उभर आये। अब तुम ऊँची जाति और धर्म का घमण्ड मत करो। क्या तुम्हें मालूम नहीं कि शीघ्र ही तुम्हें नये कारतूसों का प्रयोग करते समय उसे मुख से काटना पड़ेगा, जिनमें गाय का मांस और सुअर की चर्बी लगी हुई है। सिपाही यह सुनकर अवाक् हो गया। आक्रोश में कुछ बड़बड़ाता हुआ अपनी बैरक में लौटा और इस घटना को अपने साथियों को बतलाया। उन्होंने अफसरों से सच्चाई जाननी चाही तो उत्तर मिला कि यह सरासर झूठी बात है, परन्तु सैनिकों को तसल्ली नहीं हुई। उन्होंने बैरकपुर की कारतूस फैक्ट्री में काम करने वाले कर्मचारियों से वास्तविकता का पता लगाया तो बात यही सही निकली, जिसने भी सुना उसका पारा चढ़ता चला गया। दो मास में हिन्दुस्तान की सभी छावनियों में यह समाचार फैल गया कि फिरंगियों ने हिन्दू और मुसलमान दोनों का धर्म भ्रष्ट करने के लिये कारतूसों में गाय और सुअर की चर्बी को जानबूझकर लगाया है।

क्रान्ति की यह चिंगारी इस घटना से पहले ही योजनाबद्ध तरीके से सर्वत्र सुलग रही थी। नाना साहब, तांत्या टोपे, अजीमुल्ला खां, अवध की बेगम हजरत महल, महारानी लक्ष्मीबाई, कुंवरसिंह तथा अनेक साधु, संन्यासी गुप्त रीति से इस अग्नि को सुलगाने में लगे हुये थे। ३१ मई का दिन निश्चित किया गया। जिस दिन सारे देश में एक साथ विप्लव की अग्नि भड़क उठे और जिसमें सारी अंग्रेजी हुकूमत जलकर स्वाहा हो जाये। कमल का फूल और रोटी दो प्रतीक-ग्राम, नगर और सैनिक छावनियों में घुमाये गये। हजारों साधु, सन्त और फकीर इस सन्देश के वाहक बने।

२३ मार्च १८५७ का दिन। बैरकपुर की भारतीय सैनिकों की रजिमेंट को अंग्रेजों ने नि:शस्त्र करने की योजना बनाई परन्तु एक भारतीय सैनिक मंगल पाण्डे इस अपमान को सहन नहीं कर सका। वह भरी बंदूक लिये मैदान में कूद पड़ा और अपने साथियों को धर्मयुद्ध के लिये ललकारा। "इसे गिरफ्तार कर लो" अंग्रेज सार्जेंट ह्यूसन ने कहा, परन्तु कोई भी भारतीय सैनिक आगे नहीं बढ़ा। "लो अपनी करनी का मजा चखो" कहते हुये मंगल पाण्डे ने सारजेण्ट को अपनी बंदूक का निशान बनाया। ह्यूसन का शरीर जमीन पर लोटने लगा। दूर से एक अंग्रेज अफसर लेफ्टिनेंट वाघ घोड़े पर सवार होकर मंगल पाण्डे को गिरफ्तारी का आर्डर देते हुये आगे बढ़ा, परन्तु उसे भी गोली का निशाना बना दिया। घायल होकर वाघ फिर उठा और अपने पिस्तौल से गोली मंगल पाण्डे पर चला दी। परन्तु निशाना चूक गया। मंगल पाण्डे ने फुर्ती से अपनी तलवार निकाल वाघ की गर्दन उड़ा दी। थोड़ी देर में कर्नल व्हीलर ने आकर आज्ञा दी "मंगल पाण्डे को गिरफ्तार कर लो" परन्तु सिपाहियों ने मना कर दिया। कर्नल घबराकर बंगले पर गया और कुछ गोरे सैनिकों को लेकर आगे बढ़ा। बदलती स्थिति को देख मंगल पाण्डे ने अपनी छाती में गोली मार ली। वह घायल हो गया और पकड़ा गया। उसका कोर्ट मार्शल हुआ तथा फाँसी की सजा सुनाई। ८ अप्रैल को उसे फाँसी हुई और भारत माता के इस सपूत ने अपने जीवन की भेंट सर्वप्रथम माता के चरणों में दी तथा सदा के लिये अमर हो गया।

८ मई का दिन। मेरठ छावनी में हिन्दुस्तानी सिपाहियों को चर्बी लगे हुये कारतूस दाँतों से काटने के लिये कहा गया। अफसरों को हुकूम न मानने पर उनके हथियार रखवा लिये गये और हाथ पैरों में बेड़ियाँ पहनाकर १०-१० वर्ष की कैद की सजा सुनाई गई। उनके साथियों को जब इस बात का पता लगा तब वे बेचैन हो उठे, परन्तु अभी उन्हें तीन सप्ताह और ठहरना था। सायंकाल कुछ सैनिक शहर में आवश्यक सामान लेने के लिये गये। उधर कुंए पर कुछ स्त्रियाँ पानी भर रही थीं। सैनिकों को देख उन्होंने ताना मारा-"छी:! छी: ! तुम्हारे भाई जेलखानों में बंद हैं और तुम यहाँ बाजार में मक्खियाँ मार रहे हो। तुम्हारे जीवन पर धिक्कार है।" सिपाहियों के सब्र का घड़ा भर गया। रात्रि में गुप्त सभायें हुईं। ९ मई की रात को सिपाहियों ने दिल्ली के नेताओं को खबर भेज दी कि हम कल या परसों तक दिल्ली पहुँच रहे हैं।

१० मई को सैनिकों ने जेलखानों की दीवारों को तोड़ बंदी बनाये अपने साथियों को छुड़ा लिया। अंग्रेज अफसरों को सफाया किया जाने लगा। उनके बंगलों को आग लगा दी गई। 'हर हर महादेव' और 'मारो फिरंगियों को' की आवाज से छावनी गूंजने लगी। कितने ही अंग्रेजों को मार १० मई की रात को मेरठ के ये क्रान्तिकारी वीर दिल्ली की ओर चल पड़े।

समय से पहले क्रान्ति की यह चिंगारी फूट पड़ी। यही सबसे बुरी बात हुई। यदि ३१ मई को सारे देश में एक साथ क्रान्ति की ज्वाला भड़कती तो उसी समय अंग्रेजों का खात्मा होना निश्चित था। ११ मई

को दो हजार सैनिक दिल्ली पहुँच गये। दिल्ली में अंग्रेज कर्नल रिपले ने भारतीय सैनिकों को आदेश दिया कि तुम मेरठ से आये इन बागी सैनिकों को काबू में करो। सैनिक आज्ञा मान चल पड़े परन्तु मेरठ के सैनिकों से जाकर गले मिले। 'हर हर महादेव' और 'मारो फिरंगी को' का नारा गूंज उठा। कर्नल रिपले यह देखकर घबरा गया और तुरन्त वहीं पर मारा गया। सैनिकों ने लालकिले में जाकर अंतिम सम्राट बहादुरशाह को सलाम किया। बूढ़े सम्राट की आँखों से आँसू छलक पड़े। सारा लालकिला जयघोष के वातावरण से गूँज उठा। दिल्ली के निवासियों ने क्रान्तिकारियों का साथ दिया। जो अंग्रेज जहाँ मिला, उसको वहीं समाप्त कर दिया। दो मास तक दिल्ली में बहादुरशाह जफर का हरा झण्डा फहरता रहा। परन्तु परस्पर तालमेल का अभाव और पटियाला, नाभा तथा जिंद की सिख सेना द्वारा अंग्रेजों का साथ देने से यह स्थिति पलटने लगी। कश्मीरी गेट की दीवार तोड़कर अंग्रेजी सेना दिल्ली में प्रविष्ट हुई और फिर कत्लेआम का ताण्डव शुरू हो गया। बहादुरशाह जफर को कैद कर लिया गया और समय से पहले भड़क उठी यह क्रान्ति की ज्योति अन्त में शान्त हो गई।

कानपुर में विद्रोह- नाना साहब और अजीमुल्ला खाँ कानपुर में क्रान्ति के मुख्य सूत्रधार थे। कानपुर के ही निकट बिठूर में मराठा सेनानी तात्या टोपे भी बिठूर के दरबार में मौजूद था। दिल्ली की खबर कानपुर में पहुँचते ही शहर में हिन्दू और मुसलमानों की गुप्त मन्त्रणायें होने लगीं। फिर भी नाना साहब ने ३१ मई तक धैर्य से काम लिया और अंग्रेजों के विश्वासपात्र बने रहे। अंग्रेजों का खजाना और आयुधागार उसी की देख-रेख में था। ४ जून की आधी रात को अचानक कानपुर की छावनी में तीन फायर हुए। सिपाहियों को क्रान्ति शुरू करने के लिये यह पूर्व सूचना थी, जिसको जहाँ पर कोई अंग्रेज मिला, वहीं पर मार डाला गया। उनके दफ्तरों को आग लगा दी गई।

५ जून को अंग्रेजों के खजाने और आयुधागार पर क्रान्तियों का कब्जा हो गया। अंग्रेजों ने भागकर किले में शरण ली परन्तु नाना साहब के सामने अपनी पराजय होती देख किले पर सफेद झण्डा फहरा दिया। नाना साहब का आदेश हुआ कि जो भी अंग्रेज बिना विरोध के आत्मसमर्पण कर देगा उसे इलाहाबाद पहुँचा दिया जायेगा। दस नावों में उन्हें बैठाकर रवाना कर दिया, परन्तु इलाहाबाद और आस-पास के क्षेत्र के नागरिक जरनल नील के अत्याचारों को नहीं भूले थे। उन्होंन स्त्रियों और बच्चों को छोड़ शेष एक हजार अंग्रेजों को मौत के घाट उतार दिया। १ जुलाई को नाना साहब विधिवत् पेशवा की गद्दी पर बैठा। उसने बिठूर पर भी कब्जा कर लिया। जनरल हैवलाक के नेतृत्व में अंग्रेजों ने नाना की सेना का मुकाबला किया। दोनों पक्षों की भारी हानि हुई। नाना ने कालपी की और अपना मुख किया। जनरल हैवलाक की सेना ने इलाहाबाद से लौटकर कानपुर को अपने अधिकार में ले लिया। नाना साहब सेनापति तात्या टोपे और खजाने सहित बिठूर से निकलकर फतहपुर चला गया। तात्या टोपे ने अपनी कुशल रणनीति से अनेक स्थानों पर अंग्रेजों का मुकाबला किया। अपनी पराजय देख वे लोग नेपाल पहुँचे और महाराजा जंगबहादुर से प्रार्थना की कि वे अंग्रेजों के विरुद्ध उनकी सहायता करें, परन्तु महाराजा ने यह बात स्वीकार नहीं की। अन्त में यही प्रार्थना की गई कि इन क्रान्तिकारियों को नेपाल में रहने मात्र की स्वीकृति दी जाये। महाराज जंगबहादुर ने इसको भी स्वीकार नहीं किया और अंग्रेजी सेना को इन्हें पकड़ने की आज्ञा दी। कितने ही लोग वापस भारत लौट आये। शेष नेपाल के जंगलों में खप गये। इसके बाद नानासाहब का भी पता नहीं चला। कहा जाता है कि वे साधु बन गये और स्वतन्त्रता संग्राम के बाद बहुत दिनों तक जीवित रहे।

जवानी नाम है बलिदान का विषपान करने का।
चुनौती संकटों को दे दुःखों का मान करने का।।

***

महर्षि दयानन्द जी द्वारा लिखित अपना जन्मचरित्र

गतांक से आगे......

इतने में 19 वर्ष की जब अवस्था हुई तब जो मुझसे अति प्रेम करने वाले बड़े धर्मात्मा, विद्वान् मेरे चाचा थे उनकी मृत्यु होने से अत्यन्त वैराग्य हुआ कि संसार में कुछ भी नहीं परन्तु यह बात माता-पिता से तो नहीं कही किन्तु अपने मित्रों से कहा कि मेरा मन गृहाश्रम करना नहीं चाहता। उन्होंने माता पिता से कहा। माता-पिता ने विचारा कि इसका विवाह शीघ्र कर देना चाहिये। जब मुझको मालूम पड़ा कि ये 20 बीसवें वर्ष में ही विवाह कर देंगे तब मित्रों से कहा कि मेरे माता-पिता को समझा दो अभी विवाह न करें। तब उन्होंने एक वर्ष जैसे-तैसे विवाह रोका तब तक 20 बीसवाँ वर्ष पूरा हो गया। तब मैंने पिता जी से कहा कि मुझे काशी में भेज दीजिये कि मैं व्याकरण ज्योतिष और वैद्यक आदि ग्रन्थ पढ़ आऊँ। तब माता-पिता और कुटुम्ब के लोगों ने कहा कि हम काशी को कभी नहीं भेजेंगे। जो कुछ पढ़ना हो सो यहीं पढ़ो और अगली साल तेरा विवाह भी होगा, क्योंकि लड़की वाला नहीं मानता और हमको अधिक पढ़ा के क्या करना है जितना पढ़ा है वही बहुत है। फिर मैंने पिता आदि से कहा कि मैं पढ़कर आऊँ तब विवाह होना ठीक है तब माता भी विपरीत हो गई कि हम कहीं नहीं भेजते और अभी विवाह करेंगे। तब मैंने चाहा कि अब सामने रहना अच्छा ठीक नहीं है। फिर 3 कोश ग्राम में अपनी जिमीदारी थी वहाँ एक अच्छा पण्डित था। माता-पिता की आज्ञा लेके वहाँ जाकर उस पण्डित के पस मैं पढ़ने लगा और वहाँ के लोगों से भी कहा कि मैं गृहाश्रम नहीं करना चाहता। फिर माता-पिता ने मुझे बुला के विवाह की तैयारी कर दी तब तक 21 इक्कीस वर्ष भी पूरा हो गया। जब मैंने निश्चित जाना कि अब विवाह किये बिना कदाचित् न छोड़ेंगे।

क्रमशः......

***

स्वर्णिम भारत ---- पृष्ठ 2 का शेष

और राम, कृष्ण, अर्जुन, भीष्म, हनुमान, महाराणा प्रताप........ जैसे अनेकों वीर पराक्रमी योद्धाओं से अलंकृत रही है। इस धरा पर असंख्य चक्रवर्ती राजा हुये। फिर भी आर्यों का यह आर्यावर्त्त भारत देश जो लाखों-करोड़ों वर्षों तक विश्व का सिरमौर गुरु रहा, मार्गदर्शक व पर्थ-प्रदर्शक रहा वो क्यों लगभग दो-ढ़ाई हजार वर्षों से अवतारवाद, गुरुडम, बाबाओं, पैगम्बरों व विदेशी आक्रान्ताओं का गुलाम रहा और अब भी कुछ दुष्ट प्रकृति के लोगों का मानसिक गुलाम बना हुआ है, यह एक गम्भीर विचारणीय विषय है।

इसमें जो तीन मुख्य कारण विशेष रूप से दृष्टिगत होते हैं उसमें प्रथम है कि हमने ईश्वर द्वारा बताये व दिखाये वेद के ज्ञानमार्ग को अपने आलस्य, प्रमाद, पुरुषार्थ-हीनता, अकर्मण्यता, पाखण्ड, अन्धविश्वास, मद्यमांसादि का सेवन व चमत्कार पर विश्वास कर प्राप्त करने का प्रयास छोड़ दिया है। यही है कि स्वर्णिम भारत कहे जाने वाला भारतीय समाज अज्ञानता, अन्याय व अभाव से ग्रसित होकर पथभ्रष्ट हो रहा है।

दूसरा कारण समाज में जब सत्य ज्ञान का प्रतिपादन व विस्तार होना न्यून या समाप्त हो जाता है तो अज्ञानता की वृद्धि होती है। अज्ञानता की वृद्धि से भय, अन्धविश्वास व विवेक-हीनता बढ़ती है। इस अज्ञानता और विवेकहीनता के कारण मानव विभिन्न मत-मतान्तरों व बाबाओं द्वारा धर्म-कर्म के नाम पर फैलाये जा रहे पाखण्ड और अन्धविश्वास पर विश्वास करने लगता है। ऐसे में ज्ञान, न्याय, चरित्र, शिष्टाचार, व्यवहार, व्यक्तित्त्व की सरलता का मूल्यांकन, चमत्कार, असंख्य चेलों व अनुयायियों की संख्या, सामाजिक भव्यता व धन के चकाचौंध से इनका आकलन करने लगता है। यही अज्ञानता, पाखण्ड, अन्धविश्वास व मत-मतान्तर समाज में एक-दूसरे के प्रति भेदभाव पैदा करते हैं। इस भेदभाव को जब शक्ति का साथ मिलता है तो समाज में भ्रष्टाचार व अत्याचार बढ़ता है। यह सभी को ज्ञात है कि भ्रष्टाचार व अत्याचार हमेशा व्यक्ति या समाज अपने से निर्बल व असहाय व्यक्ति या समाज पर करता है। जिससे समाज में चहुँओर भय व अन्याय का वातारण तैयार होता है।

और तीसरा कारण है कि आदिकाल से मनुष्य को अपना जीवन जीने के लिये ज्ञान, भोजन, वस्त्र, घर, चिकित्सा और रक्षा की अति आवश्यकता रहती है और मनुष्य इसको स्वयं के पुरुषार्थ व सामाजिक व्यवस्था व न्याय से प्राप्त करने का प्रयास अधिकांशत ईमानदारी से करता है। इन प्रयासों की पूर्ति जब तक ठीक प्रकार से होती रहती है, तब तक सब ठीक रहता है। परन्तु जब कोई व्यक्ति या सामाजिक व्यवस्था अपने काम, क्रोध, लोभ, मोह, शक्ति, सत्ता व अहंकार के वशीभूत होकर समाज के सर्वसाधारण सामान्य वर्ग के साथ भ्रष्टाचार, अत्याचार, दुराचार, दुराग्रह, अन्याय व भेदभाव कर समाज के साधारण वर्ग की रोज की आवश्यकताओं की पूर्ति में अभाव व न्याय में भेदभाव करने का कार्य करता है तो निश्चित ही समाज में इससे अशान्ति फैलती है। मानवीय मूल्यों व अधिकारों का हनन होता है। अमीर-गरीब के बीच की खाई बढ़ जाती है। जातीवाद, भाषावाद, प्रान्तवाद, क्षेत्रवाद, आरक्षण, ऊंची जाति-नीची जाति, गरीबी, बेरोजगारी, भूखमरी, निराश्रय आदि जैसी सामाजिक अव्यवस्था से समाज के सौहार्द वातावरण में विष घुलने लगता है। जिससे चहुँओर भय, अन्याय, पाप, अधर्म व अभाव की वृद्धि तेजी से होने लगती है और अन्त में ऐसी व्यवस्था से दु:खी व पीड़ित हुआ व्यक्ति या समाज टूट कर बिखर जाता है। वत्तर्मान में यही विभिन्न दोष भारतीय समाज में दृष्टिगत होते हैं। जिसकी वजह से अज्ञानी, निर्बल, असहाय, गरीब व प्रताड़ित व्यक्ति या समाज अपने दु:खों से छुटकारा पाने के लिये किसी चमत्कार की आस लगाता है कि कोई तो मेरे दु:खों का निवारण करेगा। तब समाज के कुछ दुष्ट, दुराचारी, स्वार्थी, व्यभिचारी, लोभी प्रवृत्ति के व्यक्तियों द्वारा सामाजिक व्यवस्था से दु:खी और समाज की मुख्यधारा से कटी हुई भोली-भाली जनता को विभिन्न प्रलोभन दे करके कि "हम तुम्हारे कष्टों को दूर करेंगे, तुम्हारे रुके हुये कामों को करायेंगे, तुम्हारे पापों को हरेंगे, हम तुम्हारे भगवान् हैं, मैं ईश्वर का अवतार हूँ, मैं पीर-पैगम्बर हूँ, मैं ईश्वर का पुत्र हूँ" इत्यादि असत्य बोलकर धर्म के नाम पर विभिन्न पाखण्ड, चमत्कार, जादू-टोना दिखा अपने चुंगल में फंसा लेते हैं और कई बार ऐसे लोग सुनियोजित तरीके से उन गरीब असहाय लोगों को बहला-फुसलाकर, लालच देकर, डरा व धमका कर इनका धर्मान्तरण भी करते हैं तथा गुरुडमवाद व गुरुमन्त्र द्वारा अपना अन्धभक्त बनाते हैं और अपने को भगवान् का अवतार, संत, बाबा घोषित कर देते हैं। फिर उसी आम जनता से कहते हैं अपना धन, मोह-माया का त्याग करो और यह सब हमारे वशीभूत कर दो। और इस प्रकार ये ढोंगी बाबा अपने पास धन का अथाह सागर बना लेते हैं तथा अपनी ऐय्याशियों हेतु सुख-सुविधाओं की सारी वस्तुयें बड़ी चतुराई से इकट्ठी करते हैं और बेचारी आम जनता अज्ञानता, भय, अन्धभक्ति व लाचारी के कारण इनके मायाजाल व प्रलोभनों में फंस जाती है। इसका परिणाम यह निकलता है कि ये दुष्ट ढोंगी लोग विभिन्न प्रकार से शोषित आम जनता की जमीनें, धन-सम्पत्ति हड़पते हैं और फिर शारीरिक व यौन शोषण करते हैं। धीरे-धीरे आम जनता इनकी मानसिक गुलाम बनती चली जाती है और फिर ये ढोंगी लोग समाज में अपने को अच्छा दिखाने के लिये स्कूल, चिकित्सालय, अनाथालय खोलते हैं, कई बार बिना दहेज के विवाह कराते हैं और इन कार्यो में कई बार इनका सहयोग समाज के प्रतिष्ठित व सम्मानित व्यक्तियों द्वारा भी स्वार्थवश कर दिया जाता है। यह सब अच्छे कार्य लोगों की आँखों में धूल झोंकने व दिखावे के लिये किये जाते हैं जिससे आम जनता इनके विषय में यह धारणा बना ले कि मेरा बाबा बहुत दयावान् व चरित्रवान् है। जबकि वास्तव में यह सब अच्छे कार्य अपनी काली कमाई, काले धंधें, पाखण्ड व अश्लीलता को छुपाने के लिये बड़ी सफाई से अंजाम देकर जनता को मूर्ख बना धोखा देते हैं।

आज के मनुष्य को यह समझने की आवश्यकता है कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, योगीराज श्रीकृष्ण व महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती आदि जिस वेद ज्ञान को प्राप्त कर महापुरुष बन मनुष्यमात्र के लिये

शेष पृष्ठ 19 पर

श्रावणी पर्व एक चिन्तन ---- पृष्ठ 2 का शेष

प्रकार गन्ने में ग्रन्थियों के कारण ही मधुर रस सुरक्षिमत रहता है वैसे ही वैदिक पर्व मनुष्य के जीवन में संस्कृति और सभ्यता को बनाए रखते हैं।

भारत में (चौमासा) के नाम से प्रसिद्ध चार-महीने ऐसे होते हैं जिनमें वर्षा के कारण अनेक भूमिगत व जहरीले सर्प, बिच्छु, कान खजूरे आदि अनेक जीव भूमि से बाहर निकल आते हैं, इस अवस्था में सुरक्षा की दृष्टि से प्राचीन काल से ही ऋषि-महात्मागण जंगलों, पर्वतों से बाहर निकल कर, नगरों के समीप आकर किसी स्थान को केन्द्र बनाकर आवास करते थे तथा अपने अनुभव, स्वाध्याय तथा तप से, परिश्रम से, साधना से जो उन्होंने ईश्वरीय ज्ञान एकत्र किया होता था, उसे वह अपनी सेवा शुश्रूषा के बदले जन-सामान्य में बांटते थे। आर्य समाजों में भी वही परम्परा स्थापित करते हुए श्रावणी उपाकर्म का विधान किया गया है। इसे श्रावणी इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह श्रावण मास भी इन्हीं चार महीनों में आता है। श्रावण मास अत्यधिक वर्षा का महीना होता है। सभी जलाशय, नदी, नाले न केवल भरे होते हैं अपितु उफान पर होते हैं, ऐसे में सभी प्रकार के कार्य बाधित होते हैं चाहे वह कृषि का कार्य हो अथवा व्यापार का। यही कारण है कि ऋषियों ने जो सुगन्ध वर्ष भर के प्रयास से एकत्र की होती है, इस पर्व पर वह इसे जन-सामान्य में बांट देते हैं। यही कारण है कि यूनान, मिस्र जैसे राष्ट्रों के नष्ट होने पर भी सर्वाधिक प्राचीन यह भारत आज भी न केवल जीवित है अपितु अब भी विश्व का बड़ा भाग इससे मार्गदर्शन पा रहा है। कहने का तात्पर्य है कि श्रावणी नक्षत्र से युक्त पूर्णिता को यह पर्व मनाया जाता है, इसलिए इसका नाम श्रावणी (सावनी) पर्व है और यह परम्परा आधुनिक नहीं अपितु वैदिक काल से ही प्रचलित है। श्रावणी पर्व आर्यों का एक महत्त्वपूर्ण पर्व है, क्योंकि इसका सीधा सम्बन्ध वेदाध्ययन से है। वर्षा ऋतु के चार मास के अन्तर्गत विशेष रूप से गृहस्थियों के लिए श्रावणी उपाकर्म का आयोजन किया जाता है, जिसके अन्तर्गत ऋषि-मुनियों आदि के द्वारा प्रवचनों के माध्यम से वेद स्वाध्याय कराया जाता है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आदि सब वर्ण के लोग इस चौमासे के दौरान विश्राम करते हैं अर्थात् सब के कार्यक्षेत्र में शान्ति होती है, व्यवसाय में भी शिथिलता होती है। भारत कृषि प्रधान देश है। इस काल में किसानों को भी अवकाश रहता है और सन्यासियों के लिए भी बारिश के मौसम में गृहस्थियों के पास जाने का सुअवसर प्राप्त होता है क्योंकि शेष महीनों में वे ग्रामों तथा नगरों से दूर अपने आश्रमों में स्वाध्याय एवं साधनादि के कार्यों में व्यस्त रहते हैं तथा चौमासे में वर्षा के कारण अरण्य (जंगल) और वनस्थली को छोड़कर ग्रामों और नगरों में रहकर वेदाध्ययन, धर्मोपदेश और धर्मचर्चा करते हैं, इससे उनके समय का सदुपयोग भी होता है। श्रद्धालु, श्रोतागण महात्माओं, सन्तों तथा वैदिक प्रवक्ताओं के आगमन से प्रसन्न होते हैं तथा उनके प्रवचनों से लाभ उठाते हैं-यही ऋषि तर्पण है अर्थात् स्वाध्याय के द्वारा ऋषियों की पूजा (उनकी आज्ञा मानना, उनकी बात मानकर अपने जीवन शैली में परिवर्तन करना) है।

वैदिक काल से सब लोग वेद तथा आर्ष ग्रन्थों का स्वाध्याय करते थे, कभी प्रमाद नहीं करते थे। कालान्तर में विशेष कर वर्तमान में लगभग पांच हजार वर्ष पूर्व से, महाभारत युद्ध के पश्चात् वेदों के पठन-पाठन में शिथिलता आने लगी। इसका मुख्य कारण वैदिक-विद्वानों तथ श्रद्धालु श्रेताजनों का अभाव होता रहा और परिणाम यह हुआ कि लोगों की स्वाध्याय करने की प्रवृत्ति लुप्त हो गई, जिसके फलस्वरूप आधुनिक समाज में अनेक स्वार्थियों लुटेरों ने अनगिनत पाखण्डों को जन्म दिया। अतः भोले-भाले, सीधे-सादे लोगों में अनेक प्रकार के अंधविश्वस तथा अन्धश्रद्धाओं जैसे शत्रुओं ने घर कर लया। यह सब स्वाध्याय की कमी के कारण हुआ। आज भी यदि जन साधारण में स्वाध्याय की प्रवृत्ति जागृत हो जावे तो समाज में फैलते हुए पाखण्डों को रोका जा सकता है तथा धर्म के नाम पर धर्म के भक्षकों को सबक सिखाया जा सकता है। वर्त्तमान में तो 'ऋषि तर्पण' का लोप हो चुका है तथा उसके नाम पर अनेक प्रकार के पाखण्ड और अन्धविश्वास चल पड़े हैं जैसे श्रावणी के दिनों में सांपों को दूध पिलाना, नदी तथा तालाबों में जाकर स्नान करना, घर की दीवारों पर श्रावण की काल्पनिक मूर्तियां बनाकर उनको सेवियां खिलाना, पंडों द्वारा मनघड़न्त कथाएं बांचना इत्यादि। नासमझी की हद हो गई।

स्वाध्याय में प्रमादता के कारण ही हम साधु, सन्त, महात्मा, गूरु इत्यादि का पहचान करने में असमर्थ होते हैं। वर्तमान में हर गली-कूचे में तथा कथित गुरु, सन्त, साधु, महात्मादि अपनी दुकानें चला रहे हैं। ये वाक्य केवल ब्रह्मचारी के लिए नहीं अपितु सब मनुष्यों पर लागू है क्योंकि स्वाध्याय के अभाव में मनुष्य विद्या प्राप्ति से वंचित रह जाता है। (स्वाध्याय का अर्थ विस्तार भय से यहां पर न करके पाठवृन्द के हिताथ संक्षिप्त में लिखते हैं-स्वाध्याय का सामान्य अर्थ है जिन ग्रन्थों के पढ़ने से ज्ञान प्राप्त होता हो और ज्ञान के स्रोत 'वेद' हैं अतः वेद तथा वैदिक वाङ्मय का अध्ययन करना ही सही मायनों में स्वाध्याय कहाता है। इसे आर्ष ग्रन्थों के पठन-पाठन की क्रिया भी कह सकते हैं। स्वाध्याय का दूसरा अर्थ स्व+अध्याय यानि स्वयं को पढ़ना अर्थात् आत्मनिरीक्षण करना अथवा अपने कर्मों का अवलोकन करके अपनी गलतियों को सुधारना। श्रावणी पर्व में स्वाध्याय का विशेष महत्त्व होने से इस पर्व में वैदिक ग्रन्थों के स्वाध्याय का विशेष उपाक्रम अर्थात् प्रारम्भ करना चाहिए जिसका समापन अर्थात् उत्सर्जन साढ़े चार महीनों के पश्चात् किया जाता है (ऋषियों का तृप्तिकारक होने के कारण पीछे से उपाक्रम का नाम ऋषि तर्पण पड़ गया। आज ऋषि तर्पण का भी लोप हो चुका है।)

श्रावणी पर्व, श्रावण मास की पूर्णिमा को मनाया जाता, वैसे ही यह पर्व पूरे दो मास तक चलता है। श्रावणी पर्व का भी ऋतु चक्र से

घनिष्ठ सम्बन्ध है। श्रावण और भाद्रपद मास में वर्षा ऋतु में भारतीय विश्वविद्यालयों (घोर जंगलों में बसे गुरुकुलों, आश्रमों) से तपस्वी वानप्रस्थी और संन्यासी नगरों और ग्रामादिकों में आकर वेद प्रचार किया करते थे, नित्यप्रति बृहद् यज्ञों (अग्निहोत्र, हवन) का आयोजन किया जाता था और पूरे दो महीने तक प्रातः सायं नगरों और ग्रामों के नागरिक वेद शास्त्रों का श्रवण करते थे। 'श्रवण' के नाम से विख्यात इस मास विशेष के नामकरण के पीछे भी यही रहस्य छिपा हुआ है। 'श्रावण' की उत्पत्ति 'श्रवण' से हुई है, श्रवण अर्थात् सुनना और जिस मास में वेद शास्त्रों, उपनिषदों आदि की पुनीत प्रेरण वाणी को सुना जाता है वही "श्रावण मास" है। श्रावण पूर्णिमा के दिन ही यज्ञ की पूर्णाहुति देने से पहले सभी स्त्री-पुरुष अपने यज्ञोपवीत को बदलते हैं, हल्दी लगे हुए तीन सुत के धागों वाले नूतन यज्ञोपवीत को मंत्र सहित धारण करते हैं। वर्तमान में वेद प्रचार सप्ताह चाहे मात्र एक प्रतीक हो परन्तु इस अवसर पर बाह्य एवं आन्तरिक उन्नति के प्रयास किए जाते हैं। इससे इसकी और भी उपयोगिता बढ़ जाती है।

इस श्रावणी उपाकर्म के पर्व में वेदादि ग्रन्थों के अध्ययन, स्वाध्याय अर्थात् वेदादि ग्रन्थों के पठन-पाठन व श्रवण-श्रावण का प्रचलन है। आप यहाँ प्रश्न कर सकते हैं कि ईश्वरीय वाणी वेदादि ग्रन्थों का ही स्वाध्याय क्यों? अन्य मानवकृत ग्रन्थों का क्यों नहीं तो सुनिये जरा वेद का ज्ञान सृष्टि नियम के विरुद्ध नहीं होता, यह माता के समान है जो प्रेरक और पालक है। यह मनुष्य को पवित्र करता हुआ बल, संतति, पशु, कीर्ति, धन, मेधा बुद्धि तथा विद्या प्रदान करती है। यह ज्ञान सुमार्ग पर चलने का पावन ज्ञान भी देता है। कहने का तात्पर्य यह है कि वेद संपूर्ण ज्ञान के अपार भंडार हैं। प्रत्येक मनुष्य वेद एवं वेदानुकूल व्याख्या ग्रन्थों के स्वाध्याय से इस ज्ञान को पाकर अपने जीवन को मोक्ष मार्ग पर ले जा सकता है। 'ऋग्वेद' में वेद को कामधेनु भी कहा गया है। वेद कामनाओं की पूर्ति करने वाली ऐसी कामधेनु गाय है जिसके सभी अंगों में दूध ही दूध है। दूध-दूध में भी अंतर होता है, किन्तु यह वेदमाता ऐसा दूध देती है कि जो एक बार इसे पी लेता है, वह बारम्बार इसी को पीना चाहता है। जो मनुष्यकृत ग्रन्थ सार्वभौमिक सिद्धान्तों पर आधारित नहीं हैं चाहे वे किसी भी मत-पंथ, जाति या वर्ग से संबंध रखते हों, संपूर्ण संसार का हित नहीं कर सकते। ऐसा ज्ञान जो प्रत्येक मानव के लिए कल्याणकारी है, वह केवल और केवल वेदज्ञान है। इसी विशेषता के कारण इन वेदादि ग्रन्थों के अध्ययन-अध्यापन का इस श्रावणी पर्व पर प्रचलन है।

उपरोक्त सभी तथ्यों को ध्यान में रखकर श्रावणी पर्व के अवसर पर देश-विदेश की सभी आर्य समाजों में हर्षोल्लास से वैदिक प्रवचनों के कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। आप भी वहाँ जायें और अपने समय का सदुपयोग कर जीवन को सफल बनाएं। ईश्वर आपके घरों में सुख, समृद्धि, आनन्द का अथाह संचार करे, इसी कामना के साथ।

***

वैदिक मत अनुसार-श्राद्ध तर्पण

आचार्य ज्ञानेश्वरार्यः (वैदिक विद्वान्)

प्र० श्राद्ध किसे कहते हैं?

उ० जीवित माता-पिता, गुरु, विद्वान् आदि की श्रद्धापूर्वक सेवा करना श्राद्ध कहलाता है।

प्र० क्या माता-पिता की मृत्यु के बाद दान-पुण्य, भोज आदि कर्मों को करना उनका श्राद्ध होता है?

उ० जी नहीं, माता-पिता के मृत्यु के बाद दान-पुण्य, भोजन आदि कर्मों को करने से उनका श्राद्ध नहीं होता।

प्र० क्या माता-पिता के मरणोपरांत उन्हें पिण्ड दान करना वेदोक्त है?

उ० जी नहीं, माता-पिता के मरणोपरांत उन्हें पिण्ड दान वेदोक्त नहीं है।

प्र० क्या मृत व्यक्ति की अस्थि विसर्जन करने, गंगा आदि नदियों में जाना उचित है?

उ० जी नहीं, मृत व्यक्ति का अस्थि विसर्जन करने गंगा आदि नदियों में जाना उचित नहीं है। इससे इन जीवनदयिनी नदियों का जल प्रदूषित होता है।

प्र० क्या गंगा स्नान करने से, कुंभ मेले में स्नान से पाप धुल जाते हैं?

उ० जी नहीं, गंगा-स्नान करने या कुंभ आदि मेले में स्नान करने से पाप नहीं धुलते हैं।

प्र० तर्पण का अर्थ क्या है?

उ० बड़े वृद्धों को खिला-पिलाकर तृप्त करना तर्पण कहलाता है।

प्र० क्या स्नान करते समय सूर्य देवता को जल चढ़ाने से यह जल उन तक पहुँचता है?

उ० नहीं, स्नान करते समय सूर्य को जल चढ़ाने से यह जल सूर्य तक नहीं पहुँचता है।

प्र० क्या ब्राह्मणों को भोजन कराने से मृत व्यक्ति का तर्पण होता है?

उ० नहीं, ब्राह्मणों को भोजन कराने से मृत व्यक्ति का तर्पण नहीं होता है।

प्र० क्या मृत व्यक्ति की स्वर्ग प्राप्ति के लिये ब्राह्मणों को गाय आदि दान देना उचित है?

उ० नहीं, मृत व्यक्ति की स्वर्ग प्राप्ति के लिये ब्राह्मणों को गाय, सोना आदि दान देना उचित नहीं है।

प्र० गया श्राद्ध का वास्तविक अर्थ क्या है?

उ० अत्यन्त श्रद्धापूर्वक विद्वान्, अतिथि, आचार्य, माता-पिता तथा सन्तानों का पालन करना श्राद्ध कहलाता है।

***

कारगिल की शौर्य गाथा---- पृष्ठ 2 का शेष

इस युद्ध में हमारे देश की थलसेना और वायुसेना ने बिना नियन्त्रण रेखा को पार किए अपनी मातृभूमि की रक्षा की और धोखे से वार करने की आदत से मजबूर पाकिस्तानी सैनिकों को मार भगाया। कारगिल का क्षेत्र लगभग पौने दो सौ कि.मी. लम्बा है, जिसमें से आधा बर्फ से ढका रहता है। इस आधे क्षेत्र में सर्दियों में सैनिक तैनात नहीं रहते। इसी का लाभ उठाकर पाकिस्तानी सैनिकों ने मुजाहिदिनों का भेष धारण कर, इन बर्फीली चोटियों पर अपनी चौकियाँ बना लीं। क्योंकि पाकिस्तान की तरफ से इन बर्फीले पहाड़ियों की चोटियों की ऊँचाई कम थी और भारत की तरफ से ज्यादा। पाकिस्तान की 'नार्दन लाईट इफैंक्टी' के सैनिकों का यह सुनियोजित व घातक षड्यन्त्र था।

जहाँ एक ओर भारत के तत्कालीन प्रधानमन्त्री माननीय अटल बिहारी वाजपेयी जी दोनों देशों के सम्बन्धों को सुधारने के लिए "मैत्री बस सेवा" का शुभ आरम्भ कर राजनैतिक, कूटनीति, प्रेम, भाईचारे के माध्यम से दोनों देशों की जनता में आपसी सौहार्द के बढ़ाने में विशेष योगदान देने का साहसिक प्रयास कर रहे थे, वहीं दूसरी ओर पाकिस्तान ने अपनी फितरत के अनुसार पीठ में छूरा घोंपने का कार्य करते हुये कुछ दिन पश्चात् तोहफे में हमें कारगिल युद्ध दे दिया। इस युद्ध में भारत को विजयी बनाने में वायुसेना का ऑपरेशन "सफेद सागर" व नौसेना का "ऑपरेशन तलवार" विशेष महत्त्व रखता है। इस युद्ध में भारत के 550 से अधिक जवान अपनी मातृभूमि की अखण्डता के लिए बलिदान हो गए और सैकड़ों गम्भीर रूप से घायल हो गए। इन वीर जवानों के बलिदान का हम कभी ऋण नहीं उतार सकते। हमें हमेशा यह याद रखना चाहिए कि आज यदि हम अपने घरों में सुरक्षित हैं तो वो सिर्फ इन वीर सैनिकों के कारण, जो दिन-रात हमारी मातृभूमि की सीमाओं की रक्षा कर रहे हैं।

मुझे याद है जब यह युद्ध चल रहा था, तब हम सैनिकों में उत्साह भरने और अपने राष्ट्र प्रेम की भावनाओं को प्रकट करने के लिए दिल्ली के विभिन्न रेलवे स्टेशनों पर आर्य वीर दल व आर्य समाज की तरफ से सैकड़ों कार्यकर्त्ता युद्ध क्षेत्र में जा रहे हजारों जवानों को विभिन्न खाद्य सामान वितरण करते थे और भारत माता की जय, दूध मांगो खीर देंगे-कश्मीर मांगा चीर देंगे, पाकिस्तान हाय-हाय के नारे लगाकर पूरे वातावरण को राष्ट्रमय बना देते थे। देश में ऐसी राष्ट्रप्रेम की अग्नि जली थी कि जब मालूम हुआ कि सैनिकों को रक्त की आवश्यकता है तो मानो रक्त देने वालों की बाढ़ आ गई हो। इतना रक्त सैनिकों के लिए पहुँचा की स्टेडियम भरने लगे।

बन्धुओं! राष्ट्र के नागरिक कितना अपने राष्ट्र से प्रेम करते हैं, यह ऐसी विषम घटनाओं के घटने पर ही ज्ञात होती है। लेकिन इन घटनाक्रमों से हमें कुछ सीखने को भी मिलता है कि हम अपनी भारतीय संस्कृति से प्रेम करें। राष्ट्र की सुरक्षा व अखण्डता को खण्डित होने में जो भी घटक होते हैं, उन्हें फलने-फूलने न देवें। अपने भारत के वास्तविक इतिहास से ज्ञान, प्रेरणा व सन्मार्ग प्राप्त करें। किसी पर इतना विश्वास न करें कि वो विश्वासघात कर हमें छिन्न-भिन्न कर देवें। इसलिए राष्ट्र की एकता, अखण्डता, अस्मिता, भाईचारे का प्रतीक "कारगिल विजय दिवस" की सभी को बधाई।

***

विचार-शक्ति (प्रेरणास्प्रद बोध कथा)

महात्मा आनन्द स्वामी

महाभारत का युद्ध होने वाला था। विपक्षी सेनायें एक-दूसरी के समक्ष खड़ी थी। पाण्डवों का सबसे बड़ा योद्धा था- अर्जुन। स्वयं भगवान् कृष्ण उनका रथ चला रहे थे। अर्जुन ने कहा- "महाराज! मेरे रथ को दोनों सेनाओं के बीच में ले चलिये, जिससे मैं दोनों ओर की शक्तियों को देख सकूँ।"

श्रीकृष्ण ने ऐसा ही किया। अर्जुन ने दोनों ओर से योद्धाओं को देखा तो एक विचार उनके मन में उत्पन्न हुआ। दोनों ओर उसके भाई थे, सम्बन्धी थे, मित्र और नाती थे। तुरन्त विचार आया कि इनको मारकर राज्य मिल भी गया तो क्या करूँगा? उसी समय कवच आदि उतार दिये। तीर और तलवार फेंक दी। रथ से उतरकर परे जाकर खड़ा हो गया। श्रीकृष्ण महाराज ने पीछे देखा तो अर्जुन नहीं। आश्चर्य से इधर-उधर देखा तो अर्जुन रथ से दूर खड़ा था। योगीराज कृष्ण ने उसके पास जाकर कहा- "अर्जुन तुझे क्या हुआ?"

अर्जुन ने अपने हृदय का भाव बताया तो श्रीकृष्ण ने कहा- "अरे कायर! क्षत्रिय होकर यह कायरों जैसा विचार तेरे हृदय में क्यों आया?"

परन्तु अर्जुन नहीं माना; बोला- "मित्र, मैंने सोच लिया है, मैं लड़ूँगा नहीं। जिस राज्य के लिये अपने भाइयों, वृद्धों और सम्बन्धियों की हत्या करनी पड़े, वह मुझे नहीं चाहिये।"

तब योगीराज कृष्ण ने क्या किया? क्या पिस्तौल लेकर अर्जुन की छाती पर चढ़ बैठे? नहीं! शान्ति से, गम्भीरता से उन्होंने बताया कि तू क्या है? यह संसार क्या है? तेरे आस-पास खड़े लोग क्या हैं? बताया कि मोह ने तुझे कर्त्तव्यच्युत कर दिया है। वे लाखों बार उत्पन्न हुये हैं, लाखों बार उत्पन्न होंगे। बहुत महान्, बहुत सुन्दर ज्ञान है, जिसे भगवद्गीता कहते हैं। उस ज्ञान के द्वारा भगवान् कृष्ण ने उसे दैवी सम्पदा और आसुरी सम्पदा का भी हाल सुनाया। सबकुछ सुनकर अर्जुन की आँखें खुल गईं। फिर वह रथ में आया, फिर से कवच धारण किया। फिर से गाण्डीव ले लिया हाथ में। तीर चढ़ा दिया उसके ऊपर। जोश में बोला- "मैं लड़ूँगा महाराज!"

यह है विचार-शक्ति! एक अज्ञानता, मोह के विचार ने उसे रथ से नीचे उतार दिया तो दूसरे सद् कर्त्तव्य परायणता के विचार ने उसे फिर से रथ पर चढ़ा दिया।

***

माननीय रामनाथ कोविंद जी---- पृष्ठ 1 का शेष

20 जुलाई 1969-24 अगस्त 1969), वैराहागिरी वैंकटगिरी (1969-1974), फकरूद्दीन अली अहमद (1974-1977), बस्पा-दानापा जस्ती (11 फरवरी 1977-25 जुलाई 1977), नीलम संजीवा रैडी (1977-1982), ज्ञानी जैल सिंह (1982-1987), रामास्वामी वेंकटरमण (1987-1992), शंकर दयाल शर्मा (1992-1997), कोचरिल रामन नारायण (1997-2002), डॉ. ए.पी. जे. अब्दुल कलाम (2002-2007), श्रीमती प्रतिभा सिंह पाटिल (2007-2012), प्रणव मुखर्जी (2012-2017) और वर्त्तमान में श्री रामनाथ कोविंद।

आपका जन्म बहुत ही साधारण दलित-परिवार में 1 अक्टूबर 1945 को उत्तर प्रदेश के कानपुर देहात में हुआ। आपको प्राथमिक शिक्षा के लिये प्रतिदिन घर से 6-7 कि.मी. दूर जाना पड़ता था। आपका मानवता के प्रति प्रेम अतुलनीय है। आप पेशे से वकील हैं। 1975 में आपातकाल के बाद जनता पार्टी की सरकार बनने पर वित्तमन्त्री मोरारजी देसाई के निजी सचिव रहे। जनता पार्टी की सरकार में आपने सुप्रीम कोर्ट के जूनियर काउंसलर के पद पर कार्य किया था। आप उत्तर प्रदेश से दो बार 1994 व 2001 में राज्यसभा के लिये चुने गये व भा.ज.पा. के दलित मोर्चे के अध्यक्ष रहे हैं। विभिन्न प्रतिष्ठित संगठनों के मुख्य अध्यक्ष भी रहे हैं। आप मानवीय सेवा कार्यों से जुड़े रहे हैं और कुष्ठ रोगियों की समिति के संरक्षक भी हैं। आपने अपना पैतृक घर सामाजिक कार्यों के लिये **"बारात घर"** के रूप में दान कर दिया।

आपके जीवन को देखकर "मनुस्मृति" में मनु ऋषि के वर्ण-व्यवस्था के मत अनुसार कि **"जन्म से कोई ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अथवा शूद्र नहीं होता अपितु अपनी शिक्षा, पुरुषार्थ व कर्म के द्वारा किये गये कर्मों के आधार पर ही इन वर्णों को ग्रहण करता है"** सत्य ही सिद्ध होता है।

आप जिन सामाजिक व्यवस्था की न्यूनता के कारण निम्न परिवार में जन्म लेकर भी अपने पुरुषार्थ, संकल्प, दृढ़ इच्छाशक्ति, उच्च लक्ष्य, कर्मठता और आदर्शता के माध्यम से अपने जीवन का सृजन किया है, वह प्रशंसनीय एवं प्रेरणादायक है। आपने अपने जीवन से उन कथाकथित निम्न व निकृष्ट मानसिकता के लोगों के सामने उदाहरण प्रस्तुत किया है जो सामाजिक व्यवस्था की कठिनाईयों के समक्ष अपने घुटने टेक कर आरक्षण लेने व अपने लिय लागू करने की राजनैतिक स्टंटबाजी कर एवं पुरुषार्थहीन होकर दूसरों को भी पुरुषार्थहीन बनाने का कार्य करते हैं। जबकि सभी मनुष्यों को ऋषि-महर्षियों के दिखाये 'कर्मणा' वर्ण व्यवस्था के मार्ग पर चलकर अपने जीवन का निर्माण करना चाहिये। हम भारतवासी अपेक्षा करते हैं कि आप अपनी योग्यता एवं नेतृत्त्व क्षमता के माध्यम से राष्ट्र को निरन्तर आगे बढ़ायेंगे साथ ही राष्ट्र में मानवीय हितों एवं राष्ट्र की सुरक्षा में सदृढ़ता प्रदान करेंगे।

आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश, आर्य वीरांगना दल, दिल्ली प्रदेश व "युवा निर्माण" मासिक पत्रिका की ओर से नवनिर्वाचित **माननीय श्री रामनाथ कोविंद जी को "भारत के 14वें राष्ट्रपति"** बनने पर हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई।

***

योगीराज श्रीकृष्ण जी का---- पृष्ठ 3 का शेष

भर जाता है। आप चारों वेदों के ज्ञाता, याज्ञिक, ईश्वरभक्त, धर्मात्मा, धर्मरक्षक, परोपकारी, कुशल नीतिज्ञ, न्यायप्रिय, चरित्रवान्, बलवान्, सदाचारी, मित्र, व्यवहार-कुशल श्रेष्ठ महापुरुष थे। महर्षि वेदव्यास जी द्वारा रचित "महाभारत" में आपके पवित्र जीवन का सुन्दर दर्शन होता है। दूसरी ओर भागवत पुराण में स्पष्ट दृष्टिगत होता है कि किस प्रकार स्वार्थ व लोभवश इस महामानव के स्वरूप को बिगाड़कर आर्य संस्कृति को अपमानित करने का जघन्य अपराध किया है। क्योंकि यह देखा जाता है कि किसी भी संस्कृति, सभ्यता, राष्ट्र, समाज व परिवार को कलंकित व अपमानित करना हो तो उनके पूर्वजों के इतिहास व शिक्षा में मिलावट कर दूषित करने से उस जाति से समाज व व्यक्ति दूरियाँ बनाने लगता है। यहाँ तक कि कालान्तर में उस जाति में भी अपनी जाति व पूर्वजों के प्रति हीन-भावना बन जाती है और कुछ समय पश्चात् वह समाज अपने ओजस्वी, तेजस्वी व पराक्रमी वास्तविक इतिहास से अनभिज्ञ हो जाता है, जिसके कारण उस समाज में विभिन्न कुरीतियाँ जड़ पकड़ने लगती हैं।

गीता का ग्रन्थ महर्षि व्यासमुनि रचित महाभारत के भीष्म पर्व के 18 अध्यायों का संग्रह ग्रन्थ है। महाभारत के प्रमाणिक मूल श्लोक लगभग दस हजार हैं। गीता के प्रथम छः अध्याय कर्मकाण्ड, दूसरे छः अध्याय उपासना व अन्तिम छः अध्याय ज्ञान काण्ड के हैं, जिसके आदर्श, ओज एवं तेजस्वी विचारों के सामने संसार के समस्त विद्वान् नतमस्तक हैं। यह दुःखद है कि पिछले दो हजार वर्षो के दौरान इस कालजयी ग्रन्थ में एक लाख से अधिक प्रक्षिप्त श्लोकों को स्वार्थ के वशीभूत होकर जोड़ा जा चुका है। यह हमारी मूल संस्कृति व इतिहास का विनाश नहीं तो क्या है? जिसका परिणाम है कि योगीराज श्रीकृष्ण जी के महान् व्यक्तित्त्व के विपरीत समाज में सुनियोजित प्रकार से दूषित व मिलावटी जीवन को जन-जन में बड़े उत्साहपूर्वक परोसा जा रहा है। पिछले लगभग दो हजार वर्षो से भागवत पुराण वाले श्रीकृष्ण महाराज पर दूध-दही, मक्खन आदि की चोरी, कुब्जा व पर-स्त्रियों से रासलीलाओं की क्रीड़ा, मुरलीधारी, नहाती हुई गोपियों के कपड़े उठाकर भागना, रणछोड़, सोलह हजार गोपियों संग समागम या लीलायें इत्यादि मिथ्या मनमाने दोष खूब गा-गाकर लगा रहे हैं। इसको देख विभिन्न मत वाले योगीराज श्रीकृष्ण जी की बहुत-सी निन्दा करते हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं कि- "श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका गुण-कर्म-स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है। जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण जी ने जन्म से मरण पर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा नहीं लिखा।" हमारी क्या मानसिकता हो गई है कि इतने विराट् स्वरूप को न जानकर, उन जैसा ज्ञान को न प्राप्त कर, उनके दिखलाये मार्ग पर न चलकर, उन जैसा अपना चरित्र न बनाकर पाखण्डियों के पाखण्ड में बिना सोचे-विचारे विवेकहीन बन अपनी ही सर्वश्रेष्ठ वैदिक संस्कृति व इतिहास के श्रेष्ठ महापुरुषों के चरित्र व व्यक्तित्त्व को नष्ट-भ्रष्ट व कलंकित कर रहे हैं। देखो महाभारत के अनुसार श्रीकृष्ण का बाल्यकाल नन्द जी व यशोदा जी के यहाँ पर बहुत समृद्धता से व्यतीत हुआ। आपके यहाँ हजारों की संख्या में गौयें थीं। अब विचार करने का विषय है कि जिसके घर पर दूध, दही व मक्खन की मटकियाँ भरी रहती हों, उसे दूसरों के घरों में इन सबको चुराने या मटकियाँ फोड़ने की क्या आवश्यकता है।

उज्जैन नगरी में गुरु सान्दीपन ऋषि के आश्रम में आपका विद्याध्ययन हुआ। गुरुकुलीय शिक्षा को प्राप्त करने के पश्चात् आप मथुरा लौट आये और अपनी शैक्षिक योग्यता की निपुणता व पराक्रम से द्वारिका में समृद्ध व शक्तिशाली राज्य को स्थापित कर उसका सफलतापूर्वक संचालन किया। तत्पश्चात् विदर्भ के राजा भीष्मक की पुत्री विदूषी रुक्मिणी से आपका विवाह हुआ। महाभारत के अनुसार आपकी एक पत्नी थी और बहुत ही उच्च कोटि की विदूषी एवं संयमी थी। श्रीकृष्ण आपको कई बार "वेदश्रुति रुक्मिणी" कहकर बुलाते थे। विवाहोपरान्त श्रीकृष्ण ने रुक्मिणी से पूछा कि "हे रुक्मिणी तुझे कैसा पुत्र चाहिये।" तब विदूषी रुक्मिणी ने कहा कि "मुझे आपके सदृश दिखने वाला पुत्र चाहिये।" इस पर योगीराज श्रीकृष्ण ने कहा कि इसके लिये हमें 12 वर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन करते हुये पृथक्-पृथक् गुरुकुलों में रहकर गुरुओं के निर्देशन में वेदविद्या व शास्त्रों का स्वाध्याय कर योगाभ्यास से ईश्वर की उपासना करनी होगी। साथ ही वन से फलाहार करना होगा। इस प्रकार के तप द्वारा जो पुत्र उत्पन्न होगा, वह निश्चित ही मेरे सृदश होगा। आप दोनों की 12 वर्ष की कठोर तपस्या के उपरान्त 'प्रद्युम्न' नामक तेजस्वी पुत्र उत्पन्न हुआ, जो कि श्रीकृष्ण के समान बलवान व तेजवान था।

इस स्थान पर राधा कौन थी? यह बताना आवश्यक हो गया है क्योंकि वर्त्तमान में योगीराज श्रीकृष्ण महाराज के ऊपर जितने भी मनमाने चारित्रिक दोष आते हैं, उसका सम्बन्ध इस नाम के साथ अवश्य होता है। प्रथम तो यह है कि महाभारत में राधा का कहीं भी वर्णन नहीं दीखता। हाँ, **ब्रह्मवैवर्त पुराण** के अनुसार राधा वृषभानु वैश्य की कन्या थी। रायण गोत्र के साथ उसका विवाह सम्बन्ध किया गया। यह रायण नाते में यशोदा का भाई था और राधा उसकी पत्नी थी, सो राधा तो श्रीकृष्ण की मामी ठहरी और भारतीय समाज में मामी-भांजे का सम्बन्ध पवित्र माता और पुत्र का समझा जाता है। यहाँ यह समझा जा सकता है कि किस प्रकार से इन पुराण वालों ने हमारी सर्वश्रेष्ठ वैदिक संस्कृति को अपवित्र करने का षड्यन्त्रकारी प्रयास किया है। अब पुन: विचार करें कि गृहस्थ आश्रम में आने के बाद भी जो पुत्र उत्पन्न करने के लिये 12 वर्ष के कठोर ब्रह्मचर्य का पालन किया हो, ऐसे महापुरुष, योगी, चरित्रवान् व्यक्तित्त्व के लिये ये भागवत वाले हमारी अज्ञानता का लाभ उठाकर कितना नीचे गिरकर मनचाहे आरोप लगाते हैं।

श्रीकृष्ण जी कितने नीतिवान्, बलवान् व पराक्रमी थे, इसका प्रमाण यह है कि प्रजा के हित में कितने ही दुष्ट आततायियों का स्वयं संहार किया या करवाया। जैसे कंस का वध कर, कंस के पिता उग्रसेन को मथुरा का शासक बनाया, जरासंध को पाण्डवों की सहायता से समाप्त कर सौ से अधिक राजाओं को मुक्त कराया, युद्ध में अर्जुन ने युद्ध न करने की ठानी तो गीता का ज्ञान देकर अर्जुन को अपने कर्त्तव्य का बोध कराया व युद्ध लड़ने के लिये प्रोत्साहित किया, कौरवों से संख्या में बहुत कम होने पर भी पाण्डवों की युद्ध में विजय कराई इत्यादि बहुत सी घटनायें हैं, जो श्रीकृष्ण के उच्चस्तरीय नीतिज्ञ व युद्धकौशल में निपुणता को प्रदर्शित करता है। आपकी विद्वत्ता व श्रेष्ठता का प्रमाण महाराज युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ के समय भी मिलता है, जब महर्षि वेदव्याय, भीष्म पितामह, आचार्य द्रोण, महात्मा विदूर व देश-देशान्तर से आये हुये विभिन्न विद्वानों, संन्यासियों व महाराजाओं की उपस्थिति में आपकी "अग्रपूजा" की गई। अग्रपूजा अर्थात् उस समय के सर्वश्रेष्ठ मानव होने के सम्मान से सम्मानित कर विशिष्ट स्थान पर बिठाया गया। श्रीकृष्ण को भगवान् शब्द से सम्बोधित करते हैं और जन साधारण इस भगवान् शब्द से ईश्वर का अर्थ ले लेते हैं कि श्रीकृष्ण ईश्वर हैं या ईश्वर के अवतार हैं। जबकि भगवान् शब्द का सही अर्थ है कि "भग शब्द संस्कृत भाषा का है, जिसका अर्थ हुआ श्री, धर्म, यश, ज्ञान, वैराग्य व ऐश्वर्य। यह 6 गुण जिसमें अधिकाधिक हों, उसे हम भाग्यवान् कहते हैं। इन उपरोक्त 6 गुणों से श्रीकृष्ण व श्रीराम युक्त थे, जिस कारण उनको भगवान् शब्द से अलंकृत कर सम्बोधित किया जाता है। महापुरुषों के लिये भी भगवान् शब्द विशेषण (उपाधी) के रूप में प्रयोग होता है, न कि ईश्वर के लिये।

भागवत पुराण के अनुसार जो छवि योगीराज श्रीकृष्ण की बनाई गई है, उसके अनुसार आचरण करें तो समाज में गम्भीर समस्यायें उत्पन्न होंगी। जैसे भागवत पुराण अनुसार श्रीकृष्ण यमुना नदी के किनारे नदी में नहाती हुई गोपियों के नदी तट के किनारे रखे कपड़े उठाकर पेड़ पर बैठ जाता है और गोपियों द्वारा कपड़े मांगने पर भागवत

का कृष्ण कहता है कि बिना कपड़ों के बाहर आओ, तभी वस्त्र मिलेंगे। कल्पना करिये, ऐसी घटना हमारी या आपकी बेटी के साथ कोई करे तो कौन से माँ-बाप, भाई-रिश्तेदार हैं जो बर्दाश्त करेंगे। सम्भवतः भागवत पुराण मानने वाले भी न कर सकें। हम पूर्वजों को अपना भगवान् या आदर्श मानते हैं और उनके दिखाये मार्ग पर चलने का प्रयास करते हैं। यहाँ यदि भागवत के अनुसार श्रीकृष्ण का जो चरित्र रासलीलाओं का दिखाया गया है वैसी ही अपने घर की बेटी या बेटा किसी के साथ रासलीला रचा रहे हों तो किसी को आपत्ति तो नहीं होगी, क्योंकि वे तो भागवत के अनुसार अपने आदर्श पूर्वजों का ही अनुसरण कर रहे हैं। सोचो, एक पति शादी के बाद 10-20-30 गोपियाँ नुमा पत्नियाँ बनाकर ले आये या अपने पति का सम्बन्ध किसी और महिला के साथ जुड़े तो कैसा लगेगा। क्योंकि भागवत का कृष्ण तो 16000 गोपियों व कुब्जा के संग रासलीला करता था और राधा को तो प्रेमिका बना दिया। आज वर्त्तमान में भी कोई लड़का-लड़की इस प्रकार का कार्य करे तो कोई भी सभ्य समाज उन्हें स्वीकार नहीं करता बल्कि दण्ड देने व दिलवाने के लिये तत्पर हो जाता है तो उस समय जो वर्त्तमान समाज से कई गुणा अधिक सभ्य और विवेकी समाज था, यह कैसे सम्भव है कि तब इस प्रकार की रासलीलाओं व कुचेष्टाओं को किसी के लिए समाज द्वारा स्वीकार किया गया होगा। यहाँ महाभारत में एक बहुत महत्त्वपूर्ण प्रकरण आता है जहाँ शिशुपाल ने श्रीकृष्ण को अपमानित करने के उद्देश्य से सौ गालियाँ दीं। इन सौ गालियों में भी श्रीकृष्ण के ऊपर चोरी व चरित्रहीनता से सम्बन्धित कोई दोष नहीं लगाया। यदि श्रीकृष्ण में चोरी व चरित्रहीनता का कोई दोष होता तो शिशुपाल अपमानित करने के लिये इस प्रकार के आरोप अवश्य लगाता। यहाँ यह भी सिद्ध होता है कि उस समय में भी कोई योगीराज श्रीकृष्ण के ऊपर इस प्रकार के दोष लगाने का दुःसाहसी अपराध नहीं कर पाया, जिस प्रकार का जघन्य दुःसाहस भागवत पुराण आदि के द्वारा किया गया। जबकि किसी भी प्रकार की रासलीला, चोरी या व्यभिचार का वर्णन श्रीकृष्ण के लिए महर्षि व्यास मुनि रचित महाभारत में नहीं आता।

वर्त्तमान का एक ज्वलंत उदाहरण है कि दुष्ट बाबा राम रहीम के केस में जिस साध्वी ने राम रहीम के खिलाफ प्रधानमन्त्री अटल बिहारी वाजपेयी को पत्र लिखा था। उसमें उसने लिखा कि राम रहीम मुझे कहता था "मैं तेरा गुरु व भगवान् हूँ। तू मुझे अपना तन-मन-धन अर्पित कर चुकी है। आज मुझे तेरे तन की आवश्यकता है। **क्योंकि मैं तेरा कृष्ण भगवान हूँ और तू मेरी राधा।"** इस प्रकार के भाव इस पत्र से निकलते है।

यही परिणाम होता है जब हम अपने महापुरुषों के व्यक्तित्त्व, आदर्श व सभ्य इतिहास से खिलवाड़ करते हैं। अरे शर्म करो भागवत लिखने व मानने वालों, यदि गलती से भी किसी के परिवार के पूर्वज दुष्ट, दुराचारी, चरित्रहीन व चोर होते हैं तो वो परिवार भी अपने पूर्वजों के बारे में किसी को बताने में हिचकता है लेकिन यहाँ जिसे हमने भगवान्-महापुरुष-आदर्श-महामानव माना, जिसको हम पूजते हैं, जिसके दिखाये मार्ग पर चलने का हम प्रतिदिन संकल्प लेते हैं, उसी पर चरित्रहीन, चोर, परस्त्री-समागम आदि अभद्र आरोप लगाकर विश्व में कलंकित कर रहे हो। इतिहास में शायद यही एक ऐसा महामानव है जिसके व्यक्तित्त्व एवं चरित्र का शताब्दियों से सबसे अधिक दोहन किया गया। वर्त्तमान में तो उसके स्वरूप एवं प्रतिष्ठा के साथ बलात् कर अपमानित करने की सारी सीमाओं को लांघा जा रहा है।

इसलिये हे भारतवासियो! सावधान हो जाओ और योगीराज श्रीकृष्ण के वास्तविक चरित्र को जानो, मानो व प्रेरणा लो कि किस प्रकार अधर्म के बीच धर्म व सत्य को स्थापित किया और उनके अनुसार अपने जीवन के चरित्र को बनाने का प्रयास करो। योगीराज श्रीकृष्ण की मूर्ति या चित्र की पूजा नहीं, चरित्र की पूजा करो। यही योगीराज श्रीकृष्ण जैसे महामानव, महापुरुष के प्रति सच्ची कृतज्ञता होगी। अतः हमें पूर्ण पुरुषार्थ द्वारा श्रेष्ठ विद्याओं का ग्रहण कर श्रीकृष्ण के समान सुदृढ़ व अखण्ड राष्ट्र का निर्माण करना चाहिये।

***

ब्र० राजसिंह आर्य रोजगार योजना सम्बन्धित सूचना

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के माध्यम से रोजगार उपलब्ध कराने हेतु कुछ योजनाओं पर कार्य चल रहा है। यह योजना दल के ऐसे योग्य युवकों के लिए है, जिनके परिवारों की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है और जो स्वयं की पढ़ाई भी 8वीं/10वीं/12वीं या स्नातक मात्र ही बहुत मुश्किल से कर सके हैं और रोजगार प्राप्त करने का प्रयास कर रहे हैं। ऐसे सभी आर्य युवक अपना बायोडाटा aryaveerdaldelhirojgar17@gmail.com पर ईमेल करें या कार्यालय पर पोस्ट करें। दल उनके प्रोत्साहन व आजीविका के लिए रोजगार तलाशने व यथासंभव रोजगार की व्यवस्था बनाने का प्रयास करेगा। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें- श्री सुन्दर आर्य 9899008054, श्री वीरेश आर्य 9868776103, श्री गौतम आर्य 9210747806, श्री वाचस्पति शास्त्री 9999490098, श्री मनीष आर्य 9810118709

सूचना

आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश के अन्तर्गत संचालित **"आदर्श आर्यवीर भजन टोली"** गायक श्री दिनेश आर्य एवं श्री लक्ष्य आर्य व साथी।

नोट-आप अपने बच्चों के जन्मदिवस, गृहप्रवेश, आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग व वार्षिकोत्सव, क्षेत्रीय प्रचार आदि विभिन्न शुभ अवसरों पर इस आदर्श भजन टोली से सम्पर्क कर सकते हैं। सम्पर्क सूत्र- 9810754638, 9873390596

वतन के रखवालो

तर्जः- साथी हाथ बढ़ाना

वतन के रखवालो, वैदिक धर्म बचालो।
देश-धर्म लुट ना जाए, ऐसा जतन बनालो॥
वक्त की ये आवाज है, वक्त की ये आवाज है।
दे कुर्बानी आर्यवीरों ने, देश को आजाद कराया।
सर्वस्व न्यौछावर कर, अपना शीश कटाया।
बढ़ता गया सदा काफिला, कभी न रूकने पाया।
मिलकर लड़े राष्ट्रहित, आगे कदम बढ़ाया।
गुलशल के रखवालो, बगिया के रखवालो।
फूल कोई न मुरझाये, अपना चमन संभालो॥1॥
धर्मयुद्ध से जो भागा, वो आर्यवीर नहीं है।
पाप और छल करता, वो सच्चा पीर नहीं है।
जो संकट में घबराये, वो पक्का धीर नहीं है।
संकल्पों को जो ठुकराये, वो रणधीर नहीं है।
अब हथियार उठालो, उग्रवाद मिटालो।
नफरता को आग लगाकर, प्रेम की ज्योत जलालो॥2॥
नारियों पे जुल्म हो रहे, इनकी जान बचाओ।
बलात्कारी खत्म कर, इनका मान बढ़ाओ।
गऊ बेचारी रोज कटती, इनके प्राण बचाओ।
बूचड़खाने बन्द करो, गऊ की शान बढ़ाओ।
नारी सम्मान बढ़ालो, गौशाला खुलवालो।
मातृ शक्ति नारी को, जग माता गऊ बनालो॥ 3॥
जो आज विधर्मी पाप करें, तुम उनको मार भगाओ।
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्, ये आवाज लगाओ।
ओ३म् ध्वज लेकर वीरों, जग को आर्य बनाओ।
ढोंगी, पोप समाज ने लूटें, उनको तुरन्त हटाओ।
वेद धर्म अपनालो, आर्य समाज बचालो।
गुरुडम पाखण्डवाद की, गर्दन को दबालो॥4॥
आर्यवीर उद्देश्य मानकर, जीवन सफल बनायें।
संस्कृति रक्ष, शक्ति संचय, सेवा को अपनायें।
मन-वचन-कर्म की, वैदिक विधि बतायें।
ब्रह्मचर्य भठ्ठी में तपकर, चरित्र शुद्ध बनायें।
अनुशासन अपनाओ, शिष्टाचार सिखाओ।
करो स्वदेशी जागरण, डंका तुरन्त बजालो॥5॥
है वेद प्रभु मिशन, कोई जागीर नहीं है।
सच्चाई का अमर संदेशा, गलत तहरीर नहीं है।
ज्ञान भरा अनमोल खजाना, झूठ तकरीर नहीं है।
ऋषियों का उपदेश यही, उल्टी तदवीर नहीं है।
सतमार्ग अपनालो, दयानन्द के गुण गालो।
वैदिक राह दिखाई, उसे अपना गुरु बनालो॥6॥
विश्व शान्ति मार्ग है, वेद धर्म अपनालो।
खुद बनो आर्यवीर, सबको आर्य बनाओ।
पढ़ों वेद शास्त्र और, घर-घर यज्ञ रचाओ।
पवित्र वाणी है ये, वैदिक नाद बजाओ।
आर्यवीर संभालो, 'चित्रकार' तुम गालो।
देशभक्त वीरों सा, आदर्श मन सजालो॥7॥

पण्डित रोहताश आर्य (उपसंचालक आ.वी.द.दि.प्र.)

माँ भारती

पुकारती माँ भारती कि आरती उतार लो।
चढ़ा गये हैं शीश जो उनको तुम पुकार लो॥
कदम-कदम बढ़ा के जो अपना सर कटा के जो,
स्वराष्ट्र चेतना को फिर हृदय में जगा के जो।
सीने पे खाके गोलियाँ दे गये हैं प्राण जो,
चित्र उनकी आन का राष्ट्र के स्वाभिमान का आँख में उतार लो।
पुकारती माँ भारती....................
चढ़ा गये हैं शीश जो....................
हर कदम पे आज फिर है निगाहें गैर की,
कैसे सोचते हो तुम बातें अपनी खैर की।
रातें सभी रात हैं हो चाँदनी अन्धेर की।
सूर्य की आग को उसके प्रकाश को भृकुटी में थाम लो।
पुकारती माँ भारती....................
चढ़ा गये हैं शीश जो....................
सुभाष चन्द्र बोस को आजाद हिन्द फौज को,
वीर खुदीराम को आजाद जी के जोश को।
उद्धम, बिस्मिल और भगत सिंह राजगुरु सुखदेव को,
राष्ट्र के नाम पर राष्ट्रहित के तान पर गर्व से पुकार लो।
पुकारती माँ भारती....................
चढ़ा गये हैं शीश जो....................
बाल और बालिका वृद्ध और जवानियाँ,
राष्ट्र पर बलिदान की जो लिख गये कहानियाँ।
उनको अपना है नमन व श्रद्धा पुष्प अंजलियां....2
आज उनके मान को उनके गौरव गान को तिरंगे में बाँध लो।
पुकारती माँ भारती....................
चढ़ा गये हैं शीश जो....................

वीरेश आर्य (उपसंचालक आ.वी.द.दि.प्र.)

वेद स्वाध्याय

-स्वामी देवव्रत सरस्वती

कौन तुझे भजते हैं

ईळते त्वामवस्यवः कण्वासो वृक्तबर्हिषः।

हविष्मन्तो अरङ्कृतः॥ (ऋ० १/१४/५)

अर्थ- हे परमेश्वर! (अवस्यवः) अपनी सुरक्षा चाहने वाले, जिज्ञासु [अव गतौ] (कण्वासः) मेधावी [कण-रण शब्दे] जो तुम्हारी स्तुति करते और कण-कण का ज्ञान अर्जन करते हैं (वृक्तबर्हिषः) जिन्होंने अपने हृदयों के झाड़-झंखाड़ों [वासनाओं] को काटकर तुम्हारे बैठने के लिये अपना हृदय सिंहासन सजाया है। (हविष्मन्तः) जिनका जीवन हवि के समान पवित्र बन गया है, (अरंकृतः) जो यम-नियमों के पालन से सुशोभित हो गये हैं या जिन्होंने संसार के भोगों से अलं='बस' कर लिया है (त्वाम्) तुझे वे जन (ईडते) भजते हैं।

परमात्मा की भक्ति तो अपने-अपने विश्वास के अनुसार बहुत से लोग करते हैं। यहाँ तक कि चोर-लुटेरे भी अपने कार्य की सिद्धि के लिये देवी-देवताओं की मनौती मनाते हैं। गीता में इन सभी भक्तों को चार श्रेणियों में विभक्त किया है-

चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन। आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभः॥ तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त एक भक्तिर्विशिष्यते॥ (गीता ७.१६-१७)

दुःखों से ग्रस्त, जिज्ञासु=जानने की इच्छा वाले, सांसारिक धनैश्वर्य को चाहने वाले और ज्ञानी, ये चार प्रकार के लोग भगवान् की भक्ति करते हैं जिनमें परमात्मा में अनन्य प्रेम, भक्ति रखने वाला ज्ञानी ही सबसे श्रेष्ठ है। सर्वप्रथम दुःखी लोगों को ही भगवान् का नाम स्मरण होता है- **'दुःख में सुमिरन सब करें, सुख में करे न कोय'**। जब व्यक्ति सभी ओर ये अपने आपको संकटों में घिरा हुआ पाता है और उसे कोई दूसरा उपाय नहीं सूझता तब वह भगवान् की शरण में जाता है।

दूसरी श्रेणी के लोग इसलिये भी भगवान् का नाम स्मरण करते हैं कि चलो देखें तो सही कि भगवान् कैसा है और उसकी भक्ति से कुछ लाभ होता है या नहीं।

तीसरी श्रेणी में वे लोग हैं जो सांसारिक धन-सम्पत्ति या अपने कार्य की सफलता, पद-प्राप्ति आदि को ध्यान में रख जप, तप, अनुष्ठान आदि करते हैं। इनका दृष्टिकोण विशुद्ध व्यापारिक होता है।

चतुर्थ श्रेणी में ज्ञानी आते हैं जिन्हें किसी प्रकार के दुःख निवारण, जिज्ञासा और सांसारिक वस्तु की इच्छा नहीं है। वे अनन्य भाव से उसके प्रेम और भक्ति में श्रद्धान्वित होकर लगे रहते हैं।

ईश्वर प्राप्ति के उपायों में भक्तियोग सबसे सुगम है-

कहहु भक्ति पथ कवन प्रयासा, जोग न मख जप तप उपवासा। सरल स्वभाव न मन कुटिलाई, जथा लाभ सन्तोष सुहाई॥

(रामचरित. उ०का०)

परमात्मा में अनन्य प्रेम होना ही भक्ति है। वेद का यह मन्त्र मार्गदर्शन करते हुये कहता है-

१. अवस्यवः-जिन्हें मृत्यु सामने दिखाई देती है और वे उससे बचना चाहते हैं तो दूसरे उपायों को सुरक्षित न मान वे प्रभु की शरण को सर्वोत्तम जान उसी के शरणागत हो जाते हैं।

२. कण्वासः-मेधावी लोग ही ठीक प्रकार से भक्तियोग का अभ्यास कर सकते हैं। परमात्मा को इन्द्रियों द्वारा देखा जाना सम्भव नहीं। उसे केवल ज्ञान-नेत्र अर्थात् अन्तःकरण से अनुभव मात्र किया जा सकता है। जैसा कि हमें भूख-प्यास की अनुभूति होती है। भक्ति केवल अन्ध श्रद्धा न होकर ज्ञान सहित सर्वात्मना अपने आपको परमात्मा में निमग्न कर देना है। यह कार्य बुद्धिमान् ही कर सकता है, अज्ञानी नहीं।

३. वृक्तबर्हिषः-जैसे यज्ञादि में झाड़-झंखाड़ और पत्थरों को हटाकर भूमि को समतल कर सुन्दर आसन बिछाये जाते हैं जिन पर ऋत्विक् लोग बैठते हैं वैसे ही परमात्मा का आवाहन करने के लिये हृदयवेदि के चारों ओर उगी काम-क्रोध की खरपतवार और राग-द्वेष के कण्टकों को हटाकर श्रद्धा का आसन बिछाया जाता है तब कहीं वे परमदेव आकर बैठते हैं।

४. हविष्मन्तः-यज्ञ में जिन पदार्थों की आहुति दी जाती है, पहले उन्हें शुद्ध करते हैं और फिर शाकल्य बना विधि-विधान से अग्नि में उसकी आहुति देते हैं। इसी भांति जिनका जीवन पवित्र हो गया है उन्हीं पर परमात्मा कृपादृष्टि करते हैं। **अतप्तनूर्न तदामो अश्नुते**=जिसने अपने आपको तप की भट्ठी में तपाया नहीं वह कच्चा है और जैसे कच्चे घड़े में पानी नहीं ठहरता वैसे ही उसे परमात्मा का दर्शन नहीं होता।

५. अरङ्कृतः-जब किसी के यहाँ कोई अतिथि आता है तो घर का स्वामी स्वयं स्वच्छ वस्त्र पहनकर अन्य कार्यों से निवृत्त होकर द्वार पर उसकी प्रतीक्षा करता है। ऐसे ही उस प्रभु को अपना अतिथि बनाने के लिये यम-नियमों से सुसज्जित और सांसारिक झंझटों से विरक्त होकर उत्सुकता से उसकी प्रतीक्षा में पलक-पांवड़े बिछाने होते हैं। भक्ति का नशा इतना चढ़ जाये कि क्षणभर भी प्रभु से दूर होना कष्टदायक हो, तब कहीं जाकर उसकी कृपादृष्टि होती है। जिसके दर्शन हो जाने पर अन्य किसी को जानने या देखने की इच्छा शेष नहीं रहती।

***

आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश के अन्तर्गत संचालित विभिन्न शाखाओं द्वारा स्वतन्त्रता दिवस के कार्यक्रमों का आयोजन सम्पन्न

नजफगढ़ शाखा– भारत के 70वें स्वतन्त्रता के उपलक्ष्य पर आर्य वीर दल नजफगढ़ शाखा द्वारा भव्य यज्ञ का आयोजन किया गया। इस आयोजन पर सभी आर्यवीरों ने बड़ी संख्या में भाग लिया व राष्ट्रीय एकता के संकल्प को लेते हुये अनेक आहुतियाँ दी। यज्ञ के ब्रह्मा पण्डित रोहताश आर्य जी ने युवाओं को बताते हुये कहा कि अनेक युवा क्रान्तिकारियों के रक्त के बलिदान देने पर ही हमें स्वतन्त्रता मिली। भारतीय इतिहास की जानकारी देते हुये श्री आर्य जी ने शिक्षाप्रद देशभक्ति गीतों के माध्यम से उपस्थित जन-समूह को सम्बोधित किया। आर्य वीर दल नजफगढ़ शाखा ने लगभग 25 वर्षो से सैकड़ों युवाओं को चरित्रवान् बनाते हुये अनेक सैनिकों को राष्ट्र रक्षा हेतु तैयार किया है। यह शाखा पण्डित रोहताश आर्य के दिशानिर्देशन में पपरावट रोड, नियर वैष्णो देवी मन्दिर के पास संचालित हो रही है।

– पण्डित रोहताश आर्य

आर्य वीरांगना शाखा सी-3, जनकपुरी द्वारा 15 अगस्त स्वतन्त्रता दिवस एवं 5 अगस्त हरियाली पर्व के उपलक्ष्य पर आर्य वीरांगना दल सी-3 की शाखा, जनकपुरी ने भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया। जिसमें विभिन्न देशभक्ति गीतों की प्रस्तुति एवं स्वतन्त्रता दिवस पर आर्य वीरांगनाओं के उद्बोधन प्रस्तुत किये गये। यह शाखा पिछले कई वर्षो से श्रीमती ऊमा मोंगा जी के निर्देशन में संचालित हो रही है।

– श्रीमती ऊमा मोंगा

चन्द्रशेखर शाखा, जनकपुरी सी-3 के द्वारा 13 अगस्त को आर्य समाज में आर्यवीरों की भाषण प्रतियोगिता हुई, जिसमें विभिन्न आर्यवीरों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस प्रतियोगिता में अंश, मनीष, विक्की, वैभव, संजीव ने पुरस्कार प्राप्त किया। 15 अगस्त को आर्य समाज के अधिकारियों एवं शाखा के 25 आर्यवीरों ने समाज में राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा फहराया, साथ ही इसी दिन श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में देशभक्ति गीत एवं भजन प्रस्तुत किये गये। 20 अगस्त को शाखा के आर्यवीर आर्य समाज बी-2, जनकपुरी के श्रावणी पर्व के समापन समारोह पर विभिन्न सेवायें देने, कार्यक्रम में भाग लेने व विभिन्न प्रस्तुतियाँ देने गये। यह शाखा श्री संजय आर्य एवं श्री शुभम आर्य के निर्देशन में उत्साहपूर्वक प्रगति कर रही है।

– उज्ज्वल आर्य

बिन्दापुर शाखा– आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश एवं फ्रेड्स सोशल फाउंडेशन के संयुक्त तत्त्वाधान में आर्य वीर दल बिन्दापुर शाखा के द्वारा 15 अगस्त स्वतन्त्रता दिवस व फ्रेंड्स सोशल फाउंडेशन के स्थापना दिवस पर **"एक शाम बलिदानियों के नाम"** कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में बिन्दापुर के आर्यवीरों एवं आर्य वीरांगनाओं द्वारा अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी गई। मुख्य रूप से श्री सूरज आर्य व्यायाम शिक्षक के दिशानिर्देशन में प्रीत विहार शाखा के आर्यवीरों ने लकड़ी मलखम की अनुपम प्रस्तुति दी व व्यायाम शिक्षक मनीष आर्य व संदीप आर्य के निर्देशन में 12 आर्यवीरों ने भव्य आसनों का प्रदर्शन किया। इस कार्यक्रम में विभिन्न गणमान्य अतिथि उपस्थित हुये। आर्यवीरों के भविष्य को ध्यान में रखते हुये विशाल लाइब्रेरी का उद्घाटन किया गया। मंच का संचालन श्री बृहस्पति आर्य एवं श्री आलम आर्य द्वारा किया गया।

– आलम आर्य

मोती नगर– आर्य वीर दल शाखा मोती नगर एवं आर्य समाज मोती नगर के माध्यम से स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष्य पर भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस आयोजन के एक दिन पूर्व आर्य वीर दल मोती नगर शाखा के द्वारा चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें मोती नगर के आर्यवीर एवं पंजाबी बाग शाखा के आर्यवीरों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में मुख्यत: श्री संजय आर्य एवं श्री धर्मवीर आर्य का सहयोग रहा। इस प्रतियोगिता के विजेताओं को 15 अगस्त के कार्यक्रम में सम्मानित किया गया। आर्यवीरों द्वारा देशभक्ति गीतों की प्रस्तुति की गई। मोती नगर आर्य समाज के प्रधान, महामन्त्री श्री प्रवीण वधवा जी व समाज के समस्त सदस्यों का आशीर्वाद सभी आर्यवीरों को प्राप्त हुआ। इस शाखा के द्वारा साप्ताहिक यज्ञ प्रत्येक मंगलवार को सभी आर्यवीरों की उपस्थिति में किया जाता है।

– संजय आर्य

छत्रपति शिवाजी शाखा डी ब्लॉक, विकासपुरी के माध्यम से 15 अगस्त स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष्य पर विकासपुरी के विभिन्न मार्गो से साईकिल व मोटरसाईकिल रैली का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय एकता व अखण्डता के उद्देश्य को लेते हुये लगभग 60 आर्यवीरों ने इस रैली में भाग लिया तथा विभिन्न स्थानों पर राष्ट्र के लिये बलिदान होने वाले अनेक क्रान्तिकारियों को श्रद्धांजलि देते हुये देशभक्ति जयघोष व गीतों को गाते हुये सामान्य जन समूह को अपनी ओर आकर्षित किया। इस रैली को सफल बनाने में सर्वश्री रमेश आर्य, राघव आर्य, सोनू आर्य, सुनील आर्य, विक्रम आर्य, दिल मोहम्मद, सुमित आर्य आदि ने विशेष योगदान दिया।

– विक्रम आर्य

कीर्ति नगर– आर्य वीर दल कीर्ति नगर शाखा के माध्यम से 15 अगस्त के उपलक्ष्य पर 13 अगस्त को रेशमा कैंप में भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि व ध्वजारोहण के लिये महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.) को विशेष रूप से आमन्त्रित किया। कार्यक्रम का शुभारम्भ यज्ञ द्वारा किया गया। यज्ञ में महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.) व दिल्ली सभा के महामन्त्री विनय आर्य जी द्वारा सभी आर्यवीरों व आये हुये सभी अतिथियों को आशीर्वाद प्रदान किया गया। कीर्ति नगर शाखा के आर्यवीरों द्वारा देशभक्ति गीत एवं लघु नाटिकाओं के माध्यम से पूरे वातावरण को राष्ट्रमय बनाया गया। इस कार्यक्रम को सफल करने में कीर्ति नगर आर्य समाज के समस्त अधिकारियों व शाखा के सर्वश्री राजु आर्य, बिट्टू आर्य, किशन आर्य, सागर आर्य, राजकुमार आदि प्रमुख आर्यवीरों का विशेष योगदान रहा।

– किशन आर्य

मोहन गार्डन– आर्य वीर दल शाखा मोहन गार्डन के द्वारा 15 अगस्त के उपलक्ष्य पर ध्वजारोहण का कार्यक्रम किया गया। शाखा के मुख्य शिक्षक श्री गिरेन्द्र आर्य ने भारतीय इतिहास के ऊपर प्रकाश डालते हुये कहा कि हमें अपनी आजादी के महत्त्व को समझते हुये राष्ट्रहित के प्रत्येक कार्यों में भागीदारी देनी चाहिये। ताकि राष्ट्र की उन्नति हो। शाखा के व्यवस्थापक श्री दिनेश आर्य (मोहन गार्डन) ने कार्यक्रम पर सभी आर्यवीरों को शुभकामनायें दी।

– गिरेन्द्र आर्य

खरावड़ शाखा– आर्य वीर दल खरावड़ शाखा के मुख्य आर्यवीरों ने 15 अगस्त के उपलक्ष्य पर गाँव के ही सरकारी स्कूल में सुन्दर प्रस्तुति दी। जिसमें मुख्यत: श्री दिनेश आर्य ने स्कूल के एन.सी.सी. कैडिटों के द्वारा परेड द्वारा सलामी दिलवाई और साथ ही देशभक्ति गीत "गोरखपुर की जेल में बैठा" के माध्यम से स्कूल के छात्रों को आजादी के महत्त्व एवं शहीदों के जीवन पर प्रकाश डाला। श्री दिनेश आर्य के सहयोग के लिये स्कूल के माननीय प्रिंसिपल द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

– दिनेश आर्य

रामा विहार– आर्य वीर दल शाखा रामा विहार के द्वारा 15 अगस्त स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष्य पर ध्वजारोहण का कार्यक्रम किया गया। इस कार्यक्रम में आर्यवीरों के माध्यम से देशभक्ति गीतों की प्रस्तुति एवं ओजस्वी कविताओं के माध्यम से राष्ट्र के बलिदानियों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। प्रान्तीय शिविर–2017 में प्रथम स्थान पर रहे ध्रुव आर्य द्वारा इस कार्यक्रम का विधिवत् ध्वजारोहण किया गया। कार्यक्रम की समस्त व्यवस्था श्री करण आर्य, श्री मोहित आर्य एवं विभिन्न आर्यवीरों द्वारा की गई। **– लक्ष्य आर्य**

मनुष्य का सम्मान उन शब्दों में नहीं,
जो उसकी उपस्थिति में कहें जायें,
बल्कि उन शब्दों में है जो उसकी अनुपस्थिति में बोले जायें।

रक्षा बन्धन

(वर्त्तमान समय में बहनों की पीड़ा)

बहन से कलाई पर राखी तो बँधवा ली.....
500 रुपये या उपहार देकर रक्षा का वचन भी दे डाला.....
राखी गुजरी और धागा भी टूट गया.....
इसके साथ बहन का मतलब भी भूल गया.....
फिर वही चौराहे पर महफिल सजने लगी.....
लड़की दिखते ही सीटी बजने लगी, इशारे व आँखों से बलात् होने लगे.....
रक्षा बन्धन पर अपनी बहन का दिया हुआ वचन.....
आज इन सीटियों और अभद्रता में तब्दील हो गया.....
रक्षा बन्धन का ये पावन त्यौहार.....
भरे बाजार में जलील हो गया.....
पर जवानी के इस आलम में.....
एक बात तुझे न याद रही.....
वे भी तो किसी की बहन होगी.....
जिस पर छींटाकशी तूने करी.....
बहन तेरी भी चौराहे पर जाती है.....
इन अभद्र व्यवहारों की आवाज उसके कानों में भी जाती है.....
क्या वह अभद्र व्यवहार तुझसे सहन होगा.....
जिसकी मंजिल तेरी अपनी ही बहन होगी.....
फिर कैसी राखी कैसा त्यौहार.....
सब कुछ बस एक छलावा है.....
बन्द करो ये नाटक राखी का.....
जब सोच ही तुम्हारी खोटी है.....
अब अगर जवाब तेरा हाँ है.....
तो सुन चौराहे पर तेरा बुलावा है.....
हर लड़की को इज्जत व सम्मान दो.....
यही रक्षा बन्धन की कसौटी व प्रेरणा है.....

योग के आठ अङ्ग

स्वामी देवव्रत सरस्वती (प्रधान सेनापति, सा.आ.वी.द.)

गतांक से आगे............

योग का फल

१. आत्मा की अपने स्वरूप में स्थिति, ज्ञान का उदय और कर्म का क्षय होकर परमात्मा का साक्षात्कार होता है।

२. योगाभ्यास से शरीर में हलकापन, नीरोगता, मन की स्थिरता, शरीर में ओज की वृद्धि, सुगन्ध एवं रोग-शोक से छुटकारा होता है।

३. अविद्या का नाश होकर ऋतम्भरा प्रज्ञा की प्राप्ति होती है। यह प्रज्ञा वस्तु के यथार्थ स्वरूप का ज्ञान कराने में समर्थ होती है।

योग का महत्त्व

योग से आत्मदर्शन कर लेना परम धर्म (कर्त्तव्य) है। योगी तपस्वी, ज्ञानी और कर्म करने वालों में भी श्रेष्ठ है।

यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यानसमाधयोऽष्टावङ्गानि। (योग. २/२९)

1. यम- अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः (योग. २/३०)

१. अहिंसा

यमों में अहिंसा का मुख्य स्थान है। सत्य, अस्तेयादि अन्य यम उसी के पुष्टि के लिये हैं।

अहिंसा का अर्थ 'याज्ञवल्क्य स्मृति' में इस प्रकार है-

मनसा कर्मणा वाचा सर्वभूतेष सर्वदा।
अक्लेशजननं प्रोक्तमहिंसात्वेन योगिभिः॥

अर्थात् मन, वचन और कर्म से किसी भी प्राणी को मानसिक या शारीरिक पीड़ा अथवा हानि न पहुँचाना और उनके प्रति द्रोहभाव न रखना ही अहिंसा है। मन में किसी का अनिष्ट चिन्तन करना, बदला लेने की भावना या हानि पहुँचाने अथवा मारने का विचार लाना मानसिक हिंसा है।

वाणी से किसी के मर्मस्थल को आहत करना, कठोर वचन बोलना, मारने की धमकी देना वाचिक हिंसा है।

शरीर से किसी निपराध प्राणी को दुःख देना, चोट पहुँचाना और मार डालना कायिक हिंसा कहलाती है।

हिंसा की उत्पत्ति- भय, दुर्बलता, अज्ञान, क्रोध, लोभ और मोह से हिंसा का प्रादुर्भाव होता है। किसी ने हमारा अहित किया तो उसके कारण हमारे सुख की हानि हुई। फलस्वरूप हमारे मन में क्रोध का भाव उत्पन्न हो गया। हमने बदले में उसको दण्ड देने या वैसा की व्यवहार करने का निश्चय किया और हम हिंसा में प्रवृत्त हो गये।

किसी ने हमें दुर्बल समझकर हमारे ऊपर अत्याचार किया। इसका बदला लेने की भावना भी हिंसा में प्रवृत्ति करा देती है। यही बात भय का निवारण करते समय होती है। जिससे हम भयभीत होते हैं, उसे समूल नष्ट करने या हानि पहुँचाने की भावना हिंसा में प्रवृत्त करा देती है। इन सबके मूल में क्रोध का निवास है।

मांस, चमड़ा, अस्थि इत्यादि का लोभ, धन-सम्पत्ति, जमीन, जायदाद पर अधिकार करने की लालसा के कारण भी व्यक्ति हिंसा की ओर प्रवृत्ति होती है। इसी प्रकार किसी देवी-देवता को प्रसन्न करने, कामनाओं की पूर्ति करने, मनौती माँगने, खुदा के नाम पर अज्ञान या मोह के वशीभूत होकर पशुबलि या नरबलि देना भी हिंसा का एक ककारण है।

हिंसा तीन प्रकार की है-

१. **कृत**- स्वयं की हुई।

२. **कारित**- दूसरों द्वारा कराई हुई।

३. **अनुमोदित**- दूसरों द्वारा की गई हिंसा का समर्थना करना या प्रसन्न होना।

'मनुस्मृति' में आठ प्रकार के व्यक्ति बधिक (कसाई) बतलाए हैं। प्राणी को मारने की स्वीकृति देनेवाला, मारनेवाला, मृतक के अंगों को काटनेवाला, बेचनेवाला, खरीदनेवाला, पकाने वाला, परोसने वाला और खानेवाला-ये सभी प्राणी हिंसा के भागीदार और अपराधी हैं।

हिंसा-निवृत्ति के उपाय-लोभ, क्रोध या मोह के वशीभूत होकर स्वयं या दूसरों से करवाए गए हिंसादि कर्म दुःखरूप अनन्त फलों को देनेवाले हैं-यह विचारकर इनसे निवृत्त होने का उपाय करना चाहिये।

किसी ने वैरभाव से हमारा अपकार किया, यह जानकर बदले में उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना समझदारी का कार्य नहीं है। 'खून का बदला खून' या 'काँटें से काँटा निकलता है' इस बात को मन से निकाल दें।

योग के आठ अङ्ग ---- पृष्ठ 18 का शेष

न हि वैरेण वैराणि, शाम्यन्तीह कदाचन।
अवैरेण च शाम्यन्ति, एषो धर्मः सनातनः॥

अर्थात् किसी के द्वारा वैर-विराध या हमारा अपकार करने पर बदले में वैर, अपकार या प्रतिशोध की भावना को मन से निकाल देना ही एकमात्र उपाय है।

सृष्टिकर्त्ता ने सभी प्राणियों को उनके कर्मों के अनुसार शरीर दिए हैं। उसकी रचना को बिगाड़ने या मिटा देने का हमें अधिकार नहीं है। सभी प्राणियों को जीने का अधिकार है। जब हमारे शरीर में काँटा लग जाने पर ही इतनी पीड़ा और कष्ट होता है तो अपनी जिह्वा के स्वाद के लिये बेजबान, बेकसूर प्राणियों को मारना कहाँ की बुद्धिमत्ता है।

मनु जी कहते हैं- जो निरपराध, निरीह जीवों का आत्मसुख के लिये वध करता है, वह न तो इस जीवन में सुख पाता है और न ही मरते के बाद।

मांस-भक्षण के सन्दर्भ में महर्षि यास्क ने कहा है-भक्षयिता को मांस मानो कह रहा है कि जो मुझे खाता है, आगे जाकर मैं भी उसे खानेवाला हूँ।

परन्तु राग-द्वेष और क्रोधादि के वशीभूत न होकर किसी के सुधार के लिये ताड़ना करना या दण्ड देना हिंसा नहीं है। इसी भांति शल्य-चिकित्सकों द्वारा की जानेवाली चीर-फाड़ भी रोगी के हित को ध्यान में रखकर किये जाने के कारण हिंसा की कोटी में नहीं आती। ऐस ही राजधर्म का पालन करते हुये चोर, उचक्के, आततायी और दुष्टजनों को कारावास, शारीरिक पीड़ा या मृत्युदण्ड भी देना पड़े अथवा शत्रु-पक्ष के सैनिकों का युद्ध में संहार करना पड़े तो वह कर्म हिंसा न होकर कर्त्तव्यपालन ही कहा जायेगा। एक दुष्ट व्यक्ति को कारागार में डालने या मृत्युदण्ड देने से अन्य बहुत से सज्जन लोग सुख से जीवन व्यतीत करेंगे। बहुत से लोग इस भयंकर दण्ड का देख पाप-कर्म में लिप्त होने से बचने का प्रयत्न करेंगे। जिसे दण्ड दिया गया है वह भी भविष्य में पाप करने से बचेगा। इस प्रकार अनेकविध होने वाली हिंसा को रोकने के संदर्भ में यह कर्म अहिंसा में ही गिना जायेगा। इसी भाँति माता-पिता या गुरुजनों द्वारा दुर्गुणों के निवारणार्थ दिया गया शारीरिक दण्ड या वाचिक भर्त्सना भी छात्र या सन्तान की भलाई के लिये ही होती है। सीमातीत लाड़-प्यार से बच्चों के बिगड़ने की भी सम्भावना रहती है।

अहिंसा का फल-अहिंसा को पूर्ण प्रतिष्ठा हो जाने पर व्यक्ति का सब प्राणियों के प्रति वैरभाव छूट जाता है और उसके सम्पर्क में आने से अन्य प्राणी भी वैरभाव को त्याग देते हैं।

स्वर्णिम भारत ---- पृष्ठ 7 का शेष

आदर्श व पूजनीय बने, वही वेद ज्ञान हमारा भी सर्वस्व उद्धार करेगा और सभी प्रकार की धार्मिक, सामाजिक, शासकीय व न्याय व्यवस्था को ठीक करेगा। साथ ही अज्ञान, अन्याय व अभाव के कारण समाज में उत्पन्न हुये सभी मत-मतान्तरों, डेरों, मठों, धामों व उनके दुष्ट मनोवृत्ति के बाबाओं के साम्राज्य को वर्त्तमान व भविष्य में भी समाप्त कर भारतवर्ष को पुनः विश्वगुरु स्वर्णिम भारत बनायेगा।

आओ! आज संकल्प लें कि हम ईश्वर के सच्चे उपासक बनेंगे, हम किसी अवतारवाद, बाबा, पीर, पाखण्ड, अन्धविश्वास व चमत्कार में नहीं फंसेंगे, किसी भी विषय को तभी स्वीकार करेंगे जब वह विज्ञान, विवेक व तर्क की कसौटी पर खरा उतरेगा। सत्य को जानने व अज्ञानता को दूर करने के लिये वेद पढ़ेंगे, विभिन्न मत-मतान्तरों के सत्यासत्य को जानने के लिये सत्यार्थप्रकाश पढेंगे। संस्कृति को अधिकाधिक सिखेंगे। अपने निकटवर्ती आर्यसमाज में जाकर अच्छे ग्रन्थों का स्वाध्याय, चिंतन एवं मनन करेंगे और अपने ऋषि-मुनियों व महापुरुषों का सम्मान करेंगे। तभी हम इन भ्रष्ट बाबाओं व सामाजिक अव्यवस्था को दूर कर श्रेष्ठ भारत का निर्माण कर सकेंगे।

***

स्वतन्त्रता सेनानियों का एक मंदिर खड़ा किया जाये तो उसमें महर्षि दयानन्द सरस्वती की मूर्ति मंदिर की चोटी पर सबसे ऊपर होगी।

- श्रीमति ऐनी बेसेन्ट

रक्तदान महादान - मानव सेवा सबसे बड़ा धर्म

आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश द्वारा संचालित **आर्य वीर दल सेवा समिति के अन्तर्गत स्वामी श्रद्धानन्द मानव सेवा** प्रकल्प के माध्यम से दल के कर्मठ कार्यकर्त्ताओं ने अगस्त माह में **रक्तदान-महादान** किया। इसमें सर्वश्री लक्ष्य आर्य, करण आर्य, दीपक आर्य, आशीष आर्य, सुनील आर्य, बलवान आर्य, मोहित आर्य, बिट्टू आर्य, संजय आर्य, प्रशान्त आर्य, सन्तोष आर्य, मनोज आर्य व बृहस्पति आर्य रहे। दल उपरोक्त रक्तदान करने वाले सभी युवकों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

जल ही जीवन है

Deals in :-
All Type of Domestic Water Purifiers & R.O. System, Sales, Service, AMC & Repairing

Contact us :
Sanjay Arya
9718157137
9910794720

"युवा निर्माण" पत्रिका हेतु सदस्य बनें

"युवा निर्माण" पत्रिका के माध्यम से राष्ट्र निर्माण में योगदान देने हेतु पत्रिका को व्यक्ति-व्यक्ति, घर-घर की आवाज बनाने के लिए इस पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनें। वार्षिक शुल्क मात्र 150/- रुपये है।

आवश्यक सूचना

आर्य वीर दल के इतिहास से सम्बन्धित आपके पास कोई लेख/पूर्व स्मृतियाँ हैं जो आर्य वीर दल में आने वाली पीढ़ियों को उसका लाभ पहुँचा सके, वह सब दल के ईमेल- aryaveerdaldelhipradesh@gmail.com या दल के मुख्य कार्यालय पर विषय को टाईप करवाकर भेज सकते हैं। आप वॉइस रिकॉर्डिंग के माध्यम से भी वाट्सऐप पर भेज सकते हैं।

वाट्सऐप नं- 9990232164 है।

आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश का प्रयास है कि पूरे भारत में दल के गणवेश में एकरूपता हो। इस हेतु किसी भी प्रान्त को दल का गणवेश चाहिए तो वह आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश से सम्पर्क कर सकता है।

सम्पर्क सूत्र- 9810754638

आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश अपने कार्यो को दल के website : www.aryaveerdal.org व फेसबुक अकाउंट Arya Veer Dal Delhi Pradesh पर अपलोड करता है। आप सभी आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश के इन दोनों पेजो से जुड़े व उसको लाईक और शेयर करे।

अनुपम दिनचर्या की प्राप्ति

आर्य जगत् व आर्यवीरों की भारी मांग पर "अनुपम दिनचर्या एवं गीताञ्जलि" संकलनकर्त्ता- श्री दिनेश आर्य द्वारा द्वितीय संस्करण प्रकाशित किया जा चुका है। यह सुन्दर कृति आप आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश के मुख्य कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।

सम्पर्क सूत्र- 9810754638, 9990232164

दल को आर्थिक सहयोग देने हेतु-

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश, कॉपोरेशन बैंक
खाता सं.-210600101005031,
IFSC- CORP0002106
ब्रांच-वसुन्धरा, गाजियाबाद

(संस्था को दी गई दानराशि आयकर की धारा 80जी के अन्तर्गत कर मुक्त है)

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश, आर्यसमाज मिण्टो रोड, डी.डी.यू.मार्ग, निकट-रणजीत सिंह फ्लाईओवर, नई दिल्ली-2 से प्रकाशित एवं 10/63 (i) क्रिएटिव प्लैनेट, कीर्ति नगर ओद्यो. क्षेत्र, नई दिल्ली-110015 द्वारा मुद्रित

Email : aryaveerdaldelhipradesh@gmail.com | Web : www.aryaveerdal.org

सम्पादक : जगवीर आर्य 9810264634 | सहसम्पादक : बृहस्पति आर्य 9990232164 | व्यवस्थापक : जितेन्द्र भाटिया 9811322155 | मार्गदर्शक : आचार्य हरिप्रसाद 9871516470

संस्था के समस्त अधिकारी संस्था में अवैतनिक सेवा प्रदान करते हैं

प्रेषित ____________________